Class: M.A.
Semester: 2
Course Type: Core Course
Course Name: Viva-Voce

Subject: Music (Vocal/Instrumental)
Course Code: MUSI-203-PR
Paper Type: Practical

MUSIC

(Viva-Voce)

Lesson : 1 - 16

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	विषय	पृ. सं.
1	विषय सूची	ii
2	प्राक्कथन	iii
3	पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई 1 राग बिहाग का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई 2 राग बिहाग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	18
6	इकाई 3 राग बिहाग की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	32
7	इकाई 4 राग बिहाग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	47
8	इकाई 5 राग शुद्ध सारंग का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	60
9	इकाई 6 राग शुद्ध सारंग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	78
10	इकाई 7 राग शुद्ध सारंग की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	96
11	इकाई 8 राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	112
12	इकाई 9 राग बागेश्री की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	130
13	इकाई 10 राग बागेश्री की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	148
14	इकाई 11 राग बागेश्री का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	185
15	इकाई 12 राग बागेश्री का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	204
16	इकाई 13 राग वृंदावनी सारंग (गायन के संदर्भ में)	223
17	इकाई 14 राग वृंदावनी सारंग (वादन के संदर्भ में)	242
18	इकाई 15 लोक गीत/ धुन 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'	256
19	इकाई 16 ताल	268
20	महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	

प्राक्कथन

संगीत स्नात्कोत्तर के नवीन पाठ्यक्रम में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

- इकाई 1 में गायन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में गायन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में वादन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में वादन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में गायन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में वादन के संदर्भ में राग वृंदावनी सारंग का परिचय, अन्य रागों से उसका तुलनात्मक अध्ययन, आलाप, द्रुत गत, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 14 गायन के संदर्भ में राग वृंदावनी सारंग का परिचय, अन्य रागों से उसका तुलनात्मक अध्ययन, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 15 में लोक गीत / लोक धुनों का वर्णन किया गया है।
इकाई 16 में ताल पक्ष के अंतर्गत झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचाराताल, धमार ताल का परिचय व उनकी एकगुण, दुगुण, तीनगुण, चौगुण लयकारियां दी गई हैं।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, महत्वपूर्ण प्रश्न, स्वयं जांच अभ्यास, संदर्भ, अनुशंसित पठन आदि दी गई है। अंत में महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार दिया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूँ जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

Syllabus
M.A. in Performing Arts (Music)
(Hindustani Vocal/Instrumental)

SEMESTER - II

Course Code	Course Type	Course Name	Paper Type	Max. Marks	ESE	CCA	Min. Pass %age ESE+CCA	Credit
MUSI-203PR	Core Course	Viva-Voce	Practical	150	100	50	40+20	6

Course Objective

- To understand in depth various aspects of the prescribed ragas and their practical aspects including compositions.
- To understand and present the different laykaries in prescribed Talas.

Course Outcome

- Students get to study various practical aspects of ragas prescribed.
- Students learn to understand and compare different aspects of the prescribed ragas and demonstrate practically the scales and compositions therein.
- Students learn to perform different laykaries in prescribed Talas.

Course of Study

1. Student has to prepare any one Raga of his/her choice, out of the Ragas Vilambit Khyal/Vilambit Gat from the following Ragas (other than the Raga selected for Stage Performance). Student has to prepare Drut Khyal/Drut Gat in all the Ragas

55 Marks

- Shudh Sarang
- Bihag
- Bageshree
- Brindavani Sarang

2. Student is required to perform one Folk Song/Dhun during Stage Performance. 25 Marks

3. Capacity to demonstrate the following talas by hand and on Tabla with Dugun, Teengun and Chaugun Laykaris.

20 Marks

- Jhaptal
- Kehrva
- Adachautal
- Dhamar

इकाई-1

राग बिहाग - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

- 1.1 भूमिका
- 1.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 1.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें
 - 1.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना
 - 1.3.2 बिहाग राग का आलाप
 - 1.3.3 बिहाग राग का बड़ा ख्याल
 - 1.3.4 बिहाग राग की तानेंस्वयं जांच अभ्यास 1
- 1.4 सारांश
- 1.5 शब्दावली
- 1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 1.7 संदर्भ
- 1.8 अनुशंसित पठन
- 1.9 पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से बिहाग का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

1.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म'प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म'प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है।

बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है जैसे. नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म'प ग म ग, सा। बिहाग में म'प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म'प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

बिहाग राग की तुलना मारू बिहाग से कि जाती है, बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग अधिक रहता है जबकि मारू बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक किया जाता है। मारू बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग षड्ज के साथ किया जाता है (सा म, ग म प) जबकि बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग सामान्य रहता है (नी सा ग म प)। मारू बिहाग राग में अवरोह में म ग, म ग की संगति अधिक रहती है जबकि बिहार में ग म ग, की संगति प्रमुख रहती है।

जहां बिहाग राग में गांधार स्वर पर न्यास होता है वहीं यमन कल्याण में रे स्वर पर न्यास प्रमुखता से होता है। बिहाग राग में नी सा ग करते हैं जबकि यमन कल्याण में नी रे ग की संगति होती है।

1.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी नी स, सा, सा नी, सा ग, रे नी,
सा नी, नी सा नी, सा, सा,
सा नी ध प, प, प नी सा ग,
रे सा, नी नी सा, सा,
- नी सा ग म ग, सा ग म म ग,
ग, ग म प, प
- सा ग म प, म'प म'प ग म ग,

रेसा, सा, नी नी सा

● ग म प नी ऽ ध प, ध म' प,

म' प ग म ग, रे सा

● ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

नी सां गं मं मं गं, रें सां

म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं,

म' पं गं मं गं, रेंसां

● सां नी ध प, प, म' प ग म ग,

ग रे सा, नी नी सा सा

0

7

पनि

-

-ध

-

चि

ऽ

त

ऽ

3

9

नि

-

प

मप

ऽ

ऽ

ऽ

ऽऽ

4

11

गम

-

ग

सा

ऽऽ

ऽ

ऽ

ऽ

अन्तरा

X

1

रें

सां

-

धसां(सां)

स

दा

ऽ

रऽ

8

पनिसां

(सां)

-

-

चऽऽऽ

ढी

ऽ

ऽ

10

ग

गमपध

गम

ग

ऽ

ऽऽऽऽ

ऽऽ

ऽ

12

मपनिसां

सां

धनि

नि

सो

चे

सो

चेऽ

2

नि

-

धप

-

ग

ऽ

ऽ

ऽ

0

3

म पप ग म
ऽ ऽऽ ऽ ऽ

2

5

ग - सा -
ला ऽ वे ऽ

0

7

मप - नि धसां
गाँ ऽ ठ ऽ

3

9

नि - धप -
ऽ ऽ ऽ ऽ

4

11

ग - रसा -
ऽ ऽ ऽ ऽ

4

ग - मपधम -
ऽ ऽ ओऽऽऽ कु

6

रेसा - गम ग
या ऽ वि ध

8

पनिसारिँ (सां) - -
प ऽ री ऽ

10

मप (प) गम,रेग गमपधम
ऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ

1.3.4 बिहाग की तानें

- म'पगम ग- म'प
- गमग- म'पगम
- गमपनी सांनीधप
- म'पगम गरेसा-
- गगरेसा नीनीधप
- गंगरेंसां नीनीधप
- म'पगम गरेसासा
- गमपग मपगम
- नीसागम पनीधप
- मपधप म'पगम
- गरेसासा नीसानीड
- पपमप मपनीसा
- रेसानीसा नीसागग
- रेसानीसा नीसागम
- गरेसासा नीसागम
- प-गम ग-नीसा
- गमप- गमग-

नीसागम	प-गम
● मपगम	ग---
नीनीधप	मपगम
ग---	सांनीधप
मपनीनी	धपमप
गमग-	--गम
पनीसारे	सांनीधप
मपगम	गरेसासा
नीनीसासा	गगमम
● प-नीसा	गगरेसा
नीसागम	पपमग
गमपप	नीनीधप
प-नीसां	गंगरेसां
गंगरेसां	नीणपप
मपगम	गरेसा-
गमपनी	सां-गम
पनीसां-	गमपनी
● सांनीधप	मपनीनी

धपमप	गमरेसा
त्रीसागम	गमपसां
नी---	प-प-
गमपसां	नी---
प-प-	
● त्रीसागम	रेसात्रीसा
गमरेसा	सासात्रीसा
गमपम	गमगरे
सासात्रीसा	गमपनी
धपमप	गमगरे
सासागम	पनीसांनी
धपमप	गमगरे
सासात्रीसा	त्रीसागम
● मपगम	ग-नीनी
धपमप	गमग-
सांनीधप	मपनीनी
धपमप	गमग-
गमपनी	सांनीधप

मपगम	गरेसा-
नीसागम	ग-नीसा
गमग-	नीसागम
● नीसागम	पनीसारें
सांनीधप	मपगम
गरेसासा	गमपनी
सांगरेंसां	नीधपप
मपगम	गरेसासा
● नीसारे,नी	सारे,नीसा,
नीनीधप	नीसारेसा
गमप,ग	मप,गम,
गमपध	मपगम
पनीसां,प	नीसां,पनी,
पनीसारें	सांनीरेंसां
गंगरेंसां	नीसारेंसां
नीनीधप	मपगम
गगरेसा	नीसागम
पमगम	ग---

नीसागम

पमगम

ग---

नीसागम

पमगम

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 1.1 राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) नी
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 1.2 राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) म'
(ख) ग
(ग) म
(घ) सा
- 1.3 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
(क) म'
(ख) प्र
(ग) नी
(घ) सा
- 1.4 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
(क) मगमप रे म रे सा
(ख) पमप मगरेसा
(ग) मप गमग

- (घ) मप गमग
- 1.5 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
- (क) मारू बिहाग
- (ख) पूरिया
- (ग) यमन
- (घ) हंसध्वनि
- 1.6 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?
- (क) कल्याण तथा यमन
- (ख) स्वतंत्र राग है
- (ग) तीन रागों का मिश्रण है
- (घ) पूरिया तथा मारू बिहाग
- 1.7 राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
- (क) म
- (ख) प
- (ग) ध
- (घ) नी
- 1.8 राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
- (क) म
- (ख) प
- (ग) नी
- (घ) रे
- 1.9 राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?
- (क) प
- (ख) म

(ग) नी

(घ) ग

1.10. राग बिहाग का थाट क्या है?

(क) कल्याण

(ख) बिलावल

(ग) मारवा

(घ) बिहाग

1.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है। जैसे - नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग।

1.5 शब्दावली

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 1.1 (क)
- 1.2 (ख)
- 1.3 (ग)
- 1.4 (घ)
- 1.5 (क)
- 1.6 (ख)
- 1.7 (ग)
- 1.8 (घ)
- 1.9 (क)
- 1.10 (ख)

1.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

1.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग बिहाग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग के विलम्बित ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-2

राग बिहाग - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

- 2.1 भूमिका
- 2.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 2.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें
 - 2.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना
 - 2.3.2 बिहाग राग का आलाप
 - 2.3.3 बिहाग राग का छोटा ख्याल
 - 2.3.4 बिहाग राग की तानें
- स्वयं जांच अभ्यास 1
- 2.4 सारांश
- 2.5 शब्दावली
- 2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 2.7 संदर्भ
- 2.8 अनुशंसित पठन
- 2.9 पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

2.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म'प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म'प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है।

बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है जैसे. नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म'प ग म ग, सा। बिहाग में म'प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म'प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

बिहाग राग की तुलना मारू बिहाग से कि जाती है, बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग अधिक रहता है जबकि मारू बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक किया जाता है। मारू बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग षड्ज के साथ किया जाता है (सा म, ग म प) जबकि बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग सामान्य रहता है (नी सा ग म प)। मारू बिहाग राग में अवरोह में म ग, म ग की संगति अधिक रहती है जबकि बिहार में ग म ग, की संगति प्रमुख रहती है।

जहां बिहाग राग में गांधार स्वर पर न्यास होता है वहीं यमन कल्याण में रे स्वर पर न्यास प्रमुखता से होता है। बिहाग राग में नी सा ग करते हैं जबकि यमन कल्याण में नी रे ग की संगति होती है।

2.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी नी स, सा, सा नी, सा ग, रे नी,
सा नी, नी सा नी, सा, सा,
सा नी ध प, प, प नी सा ग,
रे सा, नी नी सा, सा,
- नी सा ग म ग, सा ग म म ग,
ग, ग म प, प
- सा ग म प, म'प म'प ग म ग,

रेसा, सा, नी नी सा

● ग म प नी ऽ ध प, ध म' प,

म' प ग म ग, रे सा

● ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

नी सां गं मं मं गं, रें सां

म म प नी नी सां रें सां,

गं मं पं पं,

म' पं गं मं गं, रेंसां

● सां नी ध प, प, म' प ग म ग,

ग रेसा, नी नी सा सा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
												ग	ग	म	प
												स	दा	ऽ	रं
-	प	नि	नि	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	-				
ऽ	ग	जि	न	जा	ऽ	वो	बि	दे	स	वा	ऽ				
												सां	सां	(सां)	-
												सु	ख	नीं	ऽ
धनि	नि	(प)	-	प	-	नि	नि	सां	नि	(प)	-				
द	रि	या	ऽ	सो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ				
												ग	म	प	नि
												सो	ऽ	व	न
सां	नि	प	-	प	म	ग	म	ग	ग	(सा)	-				
दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	र	वा	ऽ				

2.3.4 बिहाग राग की तानें

● म॑प	गम	ग-	म॑प
गम	ग-	म॑प	गम
● गम	पनी	सांनी	धप
म॑प	गम	गरे	सा-
● गग	रेसा	नीनी	धप्र
गंगं	रेसां	नीनी	धप
म॑प	गम	गरे	सासा
गम	पग	मप	गम
● नीसा	गम	पनी	धप
मप	धप	म॑प	गम
गरे	सासा	नीसा	नीध
प्रप्र	प्रप्र	प्रप्र	नीसा
रेसा	नीसा	नीसा	गग
रेसा	नीसा	नीसा	गम
गरे	सासा	नीसा	गम
प-	गम	ग-	नीसा
गम	प-	गम	ग-

	त्रीसा	गम	प-	गम
●	मप	गम	ग-	--
	नीनी	धप	मप	गम
	ग-	--	सांनी	धप
	मप	नीनी	धप	मप
	गम	ग-	--	गम
	पनी	सारे	सांनी	धप
	मप	गम	गरे	सासा
	त्रीत्री	सासा	गग	मम
●	प-	त्रीसा	गग	रेसा
	त्रीसा	गम	पप	मग
	गम	पप	नीनी	धप
	प-	नीसां	गंगं	रेसां
	गंगं	रेसां	नीण	पप
	मप	गम	गरे	सा-
	गम	पनी	सां-	गम
	पनी	सां-	गम	पनी
●	गम	पनी	सांनी	धप

मप	गम	गरे	सा-
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
● मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) मारू बिहाग

(ख) पूरिया

(ग) यमन

(घ) हंसध्वनि

2.2 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) स्वतंत्र राग है

(ग) तीन रागों का मिश्रण है

(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

- 2.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) ध
(घ) नी
- 2.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) नी
(घ) रे
- 2.5. राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) नी
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 2.6. राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) म^१
(ख) ग
(ग) म
(घ) सा
- 2.7. राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
(क) म^१
(ख) प
(ग) नी

- (घ) सा
- 2.8. राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
- (क) मगमप रे म रे सा
(ख) पमप मगरेसा
(ग) मप गमग
(घ) मप गमग
- 2.9. राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?
- (क) प
(ख) म
(ग) नी
(घ) ग
- 2.10. राग बिहाग का थाट क्या है?
- (क) कल्याण
(ख) बिलावल
(ग) मारवा
(घ) बिहाग

2.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है। जैसे - नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग।

2.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 2.1 (क)
- 2.2 (ख)
- 2.3 (ग)
- 2.4 (घ)
- 2.5 (क)
- 2.6 (ख)
- 2.7 (ग)
- 2.8 (घ)
- 2.9 (क)
- 2.10 (ख)

2.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

2.8 अनुशासित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग बिहाग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-3

राग बिहाग - विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

- 3.1 भूमिका
- 3.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 3.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े
 - 3.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना
 - 3.3.2 बिहाग राग का आलाप
 - 3.3.3 बिहाग राग की विलम्बित गत
 - 3.3.4 बिहाग राग की तोड़े
- स्वयं जांच अभ्यास 1
- 3.4 सारांश
- 3.5 शब्दावली
- 3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 3.7 संदर्भ
- 3.8 अनुशंसित पठन
- 3.9 पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

3.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म'प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म'प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है।

बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है जैसे. नि सा ग मा इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है।

तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म गा। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म'प ग म ग, सा। बिहाग में म'प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म'प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

बिहाग राग की तुलना मारू बिहाग से कि जाती है, बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग अधिक रहता है जबकि मारू बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक किया जाता है।

मारू बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग षड्ज के साथ किया जाता है (सा म, ग म प) जबकि बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग सामान्य रहता है (नी सा ग म प)। मारू बिहाग राग में अवरोह में म ग, म ग की संगति अधिक रहती है जबकि बिहार में ग म ग, की संगति प्रमुख रहती है।

जहां बिहाग राग में गांधार स्वर पर न्यास होता है वहीं यमन कल्याण में रे स्वर पर न्यास प्रमुखता से होता है। बिहाग राग में नी सा ग करते हैं जबकि यमन कल्याण में नी रे ग की संगति होती है।

3.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी नी स, सा, सा नी, सा ग, रे नी,

सा नी, नी सा नी, सा, सा,

- सा नी ध प्र, प्र, प्र नी सा ग,

रे सा, नी नी सा, सा,

नी सा ग म ग, सा ग म म ग,

ग, ग म प, प

- सा ग म प, म' प म' प ग म ग,

रेसा, सा, नी नी सा

- ग म प नी ऽ ध प, ध म' प,

म' प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां,

- नी सां रें सां,

नी सां गं मं मं गं, रें सां

म म प नी नी सां रें सां,

गं मं पं पं, म' पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प,

म' प ग म ग,

ग रेसा, नी नी सा सा

3.3.3 बिहाग विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											गमपसां	नी	पप	मंप	-गम
											दिरदिर	दा	दिर	दिर	-दिर
ग	ग	सा	नीनी	प्र	नीनी	सा	साम	गप	ग	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर	दा	रा					
अन्तरा															
											मम	ग	मम	प	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	नीसां	गं	मंमं	गं	गं	रें	सां	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											पनी	सां	गंमं	गं	रें
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	नीध	प	सांसां	नी	धध	प	मंप	गम	ग	सा					
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर	दा	रा					

3.3.4 बिहाग के तोड़े

- प-नीसा गगरेसा
- नीसागम पपमग
- गमपप नीनीधप
- प-नीसां गंगरेंसां
- गंगरेंसां नीणपप
- मपगम गरेसा-
- गमपनी सां-गम
- पनीसां- गमपनी
- मपगम ग- मप
- गमग- मपगम
- गमपनी सांनीधप
- मपगम गरेसा-
- गगरेसा नीनीधप
- गंगरेंसां नीनीधप
- मपगम गरेसासा
- गमपग मपगम
- नीसागम पनीधप

मपधप	मपगम
गरेसासा	नीसान्नीध
प्रप्रमप्र	मप्रनीसा
रेसान्नीसा	नीसागग
रेसान्नीसा	नीसागम
गरेसासा	नीसागम
प-गम	ग-नीसा
गमप-	गमग-
नीसागम	प-गम
● मपगम	ग---
नीनीधप	मपगम
ग---	सांनीधप
मपनीनी	धपमप
गमग-	--गम
पनीसारे	सांनीधप
मपगम	गरेसासा
नीनीसासा	गममम
● सांनीधप	मपनीनी

धपमप	गमरेसा
नीसागम	गमपसां
नी---	प-प-
गमपसां	नी---
प-प-	
● नीसागम	रेसान्नीसा
गमरेसा	सासान्नीसा
गमपम	गमगरे
सासान्नीसा	गमपनी
धपमप	गमगरे
सासागम	पनीसांनी
धपमप	गमगरे
सासान्नीसा	नीसागम
● नीसारे,नी	सारे,नीसा,
नीनीध्रप	नीसारेसा
गमप,ग	मप,गम,
गमपध	मपगम
पनीसां,प	नीसां,पनी,

पनीसारे	सांनरिसां
गंगरेसां	नीसारेसां
नीनीधप	मपगम
गगरेसा	नीसागम
पमगम	ग---
----	नीसागम
पमगम	ग---
नीसागम	पमगम
● मपगम	ग-नीनी
धपमप	गमग-
सांनीधप	मपनीनी
धपमप	गमग-
गमपनी	सांनीधप
मपगम	गरेसा-
नीसागम	ग-नीसा
गमग-	नीसागम
● नीसागम	पनीसारे
सांनीधप	मपगम

गरेसासा	गमपनी
सांगरैसां	नीधपप
मपगम	गरेसासा
● गमपनी	सांनीधप
मपगम	गरेसा-
मपगम	ग- मप
गमग-	मपगम
● मपगम	ग- मप
गमग-	मपगम
मपगम	ग- मप
गमग-	मपगम
मपगम	ग- मप
गमग-	मपगम

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?

(क) प

(ख) म

(ग) नी

(घ) ग

3.2 राग बिहाग का थाट क्या है?

- (क) कल्याण
(ख) बिलावल
(ग) मारवा
(घ) बिहाग
- 3.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) ध
(घ) नी
- 3.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) नी
(घ) रे
- 3.5. राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) नी
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 3.6. राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) म^१
(ख) ग
(ग) म
(घ) सा

- 3.7 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
- (क) मं
(ख) प्र
(ग) नी
(घ) सा
- 3.8 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
- (क) मगमप रे म रे सा
(ख) पमप मगरेसा
(ग) मप गमग
(घ) मप गमग
- 3.9 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
- (क) मारू बिहाग
(ख) पूरिया
(ग) यमन
(घ) हंसध्वनि
- 3.10 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?
- (क) कल्याण तथा यमन
(ख) स्वतंत्र राग है
(ग) तीन रागों का मिश्रण है
(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

3.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मन्द्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है जैसे - नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीब्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग।

3.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 3.1 (क)
- 3.2 (ख)
- 3.3 (ग)
- 3.4 (घ)
- 3.5 (क)
- 3.6 (ख)
- 3.7 (ग)
- 3.8 (घ)
- 3.9 (क)
- 3.10 (ख)

3.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

3.8 अनुशांसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-4

राग बिहाग - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

- 4.1 भूमिका
- 4.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 4.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े
 - 4.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना
 - 4.3.2 बिहाग राग का आलाप
 - 4.3.3 बिहाग राग का द्रुत गत
 - 4.3.4 बिहाग राग की तोड़े
- स्वयं जांच अभ्यास 1
- 4.4 सारांश
- 4.5 शब्दावली
- 4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 4.7 संदर्भ
- 4.8 अनुशंसित पठन
- 4.9 पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

4.3.1 बिहाग राग का परिचय तथा तुलना

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म'प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म'प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है। जैसे. नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म'प ग म ग, सा। बिहाग में म'प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म'प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

बिहाग राग की तुलना मारू बिहाग से कि जाती है, बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग अधिक रहता है जबकि मारू बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक किया जाता है। मारू बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग षड्ज के साथ किया जाता है (सा म, ग म प) जबकि बिहाग राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग सामान्य रहता है (नी सा ग म प)। मारू बिहाग राग में अवरोह में म ग, म ग की संगति अधिक रहती है जबकि बिहार में ग म ग, की संगति प्रमुख रहती है।

जहां बिहाग राग में गंधार स्वर पर न्यास होता है वहीं यमन कल्याण में रे स्वर पर न्यास प्रमुखता से होता है। बिहाग राग में नी सा ग करते हैं जबकि यमन कल्याण में नी रे ग की संगति होती है।

4.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी नी स, सा, सा नी, सा ग, रे नी,
सा नी, नी सा नी, सा, सा,
सा नी ध प, प, प नी सा ग,
रे सा, नी नी सा, सा,
- नी सा ग म ग, सा ग म म ग,

ग, ग म प, प

- सा ग म प, म' प म' प ग म ग,

रेसा, सा, नी नी सा

ग म प नी ङ ध प, ध म' प,

म' प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां,

- नी सां रें सां,

नी सां गं मं मं गं, रें सां

म म प नी नी सां रें सां,

गं मं पं पं,

म' पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प, म' प ग म ग,

ग रेसा, नी नी सा सा

4.3.3 बिहाग द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
						गग	मम	रेऽ	रेसा	ऽसा	नीऽ	सा	ध	ऽ	नी
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	रा	दा	ऽ	रा
रे	ऽ	ऽ	सा	ऽ	सा										
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा										
						गग	मम	पऽ	पग	ऽग	मऽ	प	धध	नी	ध
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ध	नी	रे	सां										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										
अन्तरा															
						गग	मम	ग	मम	पप	धध	नीऽ	नीध	ऽध	नीऽ
						दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
रे	ऽ	ऽ	रे	सां	रे	सां	सां								
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	नीनी	रे	सां	नी	धध	प	ध
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
पऽ	पग	ऽग	मऽ	रे	सा										
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	रा										

4.3.4 बिहाग के तोड़े

● मप	गम	ग-	--
नीनी	धप	मप	गम
ग-	--	सांनी	धप
मप	नीनी	धप	मप
गम	ग-	--	गम
पनी	सारे	सांनी	धप
मप	गम	गरे	सासा
नीनी	सासा	गग	मम
● गग	रेसा	नीनी	धप
गंग	रेसां	नीनी	धप
मप	गम	गरे	सासा
गम	पग	मप	गम
● नीसा	गम	पनी	धप
मप	धप	मप	गम
गरे	सासा	नीसा	नीध
प्रप्र	प्रप्र	प्रप्र	नीसा
रेसा	नीसा	नीसा	गग

रेसा	नीसा	नीसा	गम
गरे	सासा	नीसा	गम
प-	गम	ग-	नीसा
गम	प-	गम	ग-
नीसा	गम	प-	गम
● मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
● गम	पनी	सांनी	धप
मप	गम	गरे	सा-
● प-	नीसा	गग	रेसा
नीसा	गम	पप	मग
गम	पप	नीनी	धप
प-	नीसां	गगं	रेसां
गगं	रेसां	नीध	पप
मप	गम	गरे	सा-
गम	पनी	सां-	गम
पनी	सां-	गम	पनी
● गम	पनी	सांनी	धप

मप	गम	गरे	सा-
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
● मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम
मप	गम	ग-	मप
गम	ग-	मप	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 4.1 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
- (क) मारू बिहाग
(ख) पूरिया
(ग) यमन
(घ) हंसध्वनि
- 4.2 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?
- (क) कल्याण तथा यमन
(ख) स्वतंत्र राग है
(ग) तीन रागों का मिश्रण है
(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

- 4.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) ध
(घ) नी
- 4.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म
(ख) प
(ग) नी
(घ) रे
- 4.5. राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) नी
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 4.6. राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) म^१
(ख) ग
(ग) म
(घ) सा
- 4.7. राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
(क) म^१
(ख) प्र
(ग) नी

- (घ) सा
- 4.8 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
- (क) मगमप रे म रे सा
(ख) पमप मगरेसा
(ग) मप गमग
(घ) मप गमग
- 4.9. राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?
- (क) प
(ख) म
(ग) नी
(घ) ग
- 4.10. राग बिहाग का थाट क्या है?
- (क) कल्याण
(ख) बिलावल
(ग) मारवा
(घ) बिहाग

4.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है। जैसे - नि सा ग मा। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म'प, ग म ग या म'प ग म ग।

4.5 शब्दावली

- द्रुत गतः उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलापः वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत लयः वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लयः वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लयः गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1	(क)
4.2	(ख)
4.3	(ग)
4.4	(घ)
4.5	(क)
4.6	(ख)
4.7	(ग)
4.8	(घ)
4.9	(क)
4.10	(ख)

4.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

4.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तांत्रिक विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-5

राग शुद्ध सारंग - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

- 5.1 भूमिका
- 5.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 5.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें
 - 5.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना
 - 5.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
 - 5.3.3 शुद्ध सारंग राग का बड़ा ख्याल
 - 5.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें
- स्वयं जांच अभ्यास 1
- 5.4 सारांश
- 5.5 शब्दावली
- 5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 5.7 संदर्भ
- 5.8 अनुशंसित पठन
- 5.9 पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

5.3.1 शुद्ध सारंग का परिचय तथा तुलना

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याह्न

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोहः- नी सा, ^१रे, म'प, नी सा।

अवरोहः- सां नी, ध प, म'प, ^१रे म रे, नि सा।

पकड़:- ^२रे म' प, म रे, सा नी ऽ, ध, तथा प्र नि ध, सा नि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का गायन समय मध्याह्न काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा ^२रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा ^२रे म', म', प, म' प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, म' प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा नि ऽ)। स्वर संगति प्र नि ध, सा नि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा श्याम कल्याण में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ है जबकि श्याम कल्याण राग का वादी स्वर पंचम है। शुद्ध सारंग राग का संवादी स्वर पंचम है जबकि श्याम कल्याण राग का संवादी स्वर षड्ज है। शुद्ध सारंग राग का वादन-गायन समय मध्याह्न माना जाता है जबकि दूसरी ओर राग श्याम कल्याण का गायन वादन समय रात्रि कालीन रहता है। शुद्ध सारंग राग, वृंदावनी सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है जबकि श्याम कल्याण राग कामोद तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। शुद्ध सारंग राग की जाति औड़व-षाड़व है जबकि श्याम कल्याण राग की जाती औड़व-संपूर्ण मानी जाती है। शुद्ध सारंग राग में गंधार पूर्ण रूप से वर्जित रहता है जबकि श्याम कल्याण राग में गंधार का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यमों (शुद्ध तथा तीव्र) का प्रयोग एक साथ भी किया जाता है (सां नी ध प, म' प म म रे सा) जबकि श्याम कल्याण में तीव्र मध्यम पंचम के साथ तथा शुद्ध मध्यम प्रधार के साथ लगता है (सां नी ध प, म' प ग म रे सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह करते समय ऋषभ पर मध्यम का कण लेते हैं (नी सा ^२रे म) जो सारंग अंग की पहचान है जबकि श्याम कल्याण में ऋषभ का प्रयोग सीधा रहता है (नी सा रे म)। शुद्ध सारंग राग में म' प रे म रे, सा का प्रयोग होता है जबकि श्याम कल्याण में म प ग म रे सा का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध

सारंग राग की पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है जबकि श्याम कल्याण के पूर्वांग में कामोद तथा उत्तरांग में कल्याण की छाया दिखाई देती है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा वृंदावनी सारंग में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग के अवरोह में धैवत स्वर का प्रयोग होता है (सां नी, ध प, म' प, रै म रे) जबकि वृंदावनी सारंग में धैवत स्वर पूर्ण रूप से वर्जित रहता है (सां नी, प, म प)। शुद्ध सारंग राग में केवल शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा) जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद लगते हैं, आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद (प नी सां, सां नी प म प म रे, सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में केवल शुद्ध मध्यम का ही प्रयोग होता है। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है (शुद्ध सारंग- प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा, वृंदावनी सारंग- प नी सां, सां नी प म प म रे, प म रे सा)।

5.3.2 आलाप

- सा, नी नी सा रे म, रे नी सा, नी सा रे
म म - रे म रे नी सा नी सा।
- सा नी ध प्र, नी ध सा, नी रे, सा रे म रे,
म रे नी नी सा रे - सा, सा सा
- सा ऽ म रे, नी सा म रे, म रे सा ऽ ऽ
नी ध प्र नी सा म रे,
रे म' प रे म रे नी सा रे म' प रे म
रे प्र नी ध सा नी रे सा,
म रे म' प ध म' प रे म रे,

नी ध सा नी रे ऽ सा।

- नी सा रे म' प ऽ ऽ म' प प रे म रे म' म' ऽ ऽ म' प,

म' प ध म' प, रे म' प ध ध प,

ध प म' प रे म रे सा प म रे म' प म'

प नी ध प म रे ऽ म' प,

नी ध सा नी रे सा म रे

प म' प नी ध प, रे म'

प ध ध प ऽ ध ध प म' प,

रे म रे नी सा रे म' प ध,

म' प रे म रे म रे सा नी,

नी ध सा नी रे सा, सा, सा

- म' प नी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें म' प ऽ ऽ

मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

सां नी ध प, रे म' प रे म रे

सा नी ध सा नी रे सा, सा, सा ऽ

5.3.3 राग शुद्ध सारंग बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

ए बन्ना बन आया, आया री मेरे द्वारे।

अन्तरा

अदारंग बन्ने सिर मोर बिराजत बनरी की मांग भराया॥

स्थायी

12

				नीसारेमप	मेरेसा	—	नीधप
				एऽऽऽ	बना	ऽ	बऽन
X							
1				2			
नी	-	-	-	नीध	सान्नी	रे	-
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
0							
3				4			
सान्नीरेसा	-	-	-	नी	सा	रे	म'
याऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ
2							
5				6			
प	-	-	ध म'प	म	-	रे	-
या	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

0

7

रे म'म' प -
मे ऽ रे ऽ

3

9

रेंसानी नी धप ध म'प
द्वा ऽ ऽ ऽ ऽ

4

11

रे रे सा
रे ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

x

1

सां - - सां नीरें
ग ऽ ऽ ऽ

8

प - - नीसां
ऽ ऽ ऽ ऽ

10

म - रे -
ऽ ऽ ऽ ऽ

12

मरे रेम' प पनी
अऽ दाऽ रे ऽ

2

सां नीरेंसां - - -
नेऽऽऽ ऽ ऽ ऽ

0

3

नी	सां	रेमंमरे	रेमंमरेसांनी
सि	ऽ	रऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ

2

5

रेसांनी	ध	प	प म' धप
राऽऽ	ऽ	ऽ	जऽऽऽ

0

7

रे	म'	प	नी
ब	न	री	की

3

9

प	प म'	ध	प
भ	ऽऽ	ऽ	ऽ

4

11

नी	-	नीसारे	मरेसा
या	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ

4

नी	नी	नी	सां
मो	र	बि	ऽ

6

भ्रै	म	-	भ्रै
त	ऽ	ऽ	ऽ

8

सां	नी	ध	प
मां	ऽ	ऽ	ग

10

मरे	रेम	रे	सा
राऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ

5.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

• नी	ऽ	सा	ऽ,
मरे	-	रेम	-,
मरे	-	सा	-
नी	ध्रप	मंप	नी
नी	-	-	नीनी,
सा	-	-	-
रेम	रेसा	नीसा	नीनी
ध्रप	मंप	नी	नी
सा	नी	रेसा	नीसा
नीध्र	सान्नी	रे	सा
• नीसारे	मरेसा	नीसा-	रेमंप
धमंप	रेमरे	सान्नीसा	रेनीसा
ममरेसा	रेमरेसा	नीध्रसान्नी	रेसा--
रेमंपध	मंपरेम	पनीध्रप	ममरेसा
पनीसांनी	धपमंप	रेमपनी	सारेंसांनी
धपमंप	रेमपध	मंपरेम	रेसान्नीसा
नीध्रप-	मंपनीसा	नीध्रसान्नी	रेसान्नीसा

सांनीसांप	नीसांनीध	पमंप-	ममरेसा
सान्नीध्रप्रमंपनीसा		मरेनीधसान्नीरिसा	
नीनीधपरेमरेसा		पनीसांनीरिमरेसा	
ममरेसाममरेसा		रेमरेसारेमरेसा	
नीध्रसान्नीनीध्र		सान्नीनीध्रसान्नी	
● नीनीसा-	नीरिनीसा	रेमंपध	मंपमरे
नीनीनीरे	नीसारेम	पधमंप	मंपमरे
नीरिसान्नी	प्रनीसारे	मरेसान्नी	रे-सा-
रेमंपनी	पधमंप	नीध्रसांनी	रें-मंपं
सांनीधप	ममरेनी	रेनीसा-	नीध्रसा-
नीरिसा-			
● निसा	रेसा	निसा	रेरे
मम	रेसा	निसा	रेसा
● प्रपप्र,प्रपप्र,पप,		नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	
सासासा,सासासा,सासा,		रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	
ममम,ममम,मम,		रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,		पपप,पपप,पप,	
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,		धधध,धधध,धध,	

पपप,पपप,पप,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
धधध,धधध,धध,	पपप,पपप,पप,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	पपप,पपप,पप,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	ममम,ममम,मम,
रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासासा,सासा,
रेमरेसाज्ञीऽ रेम	रेसाज्ञीऽ रेमरेसा
● प्रपप्र,प्रपप्र,	नीनीनी,नीनीनी,
सासासा,सासासा,	रेरेरे,रेरेरे,
ममम,ममम,	रेरेरे,रेरेरे,
मंमंमं,मंमंमं,	पपप,पपप,
मंमंमं,मंमंमं,	धधध,धधध,
पपप,पपप,	नीनीनी,नीनीनी,
सांसांसां,सांसांसां,	रेरेरे,रेरेरे,

मंमंमं,मंमंमं,

रेरेरे,रेरेरे,

मंमंमं,मंमंमं,

रेरेरे,रेरेरे,

सांसांसां,सांसांसां,

नीनीनी,नीनीनी,

धधध,धधध,

पपप,पपप,

मंमंमं,मंमंमं,

पपप,पपप,

मंमंमं,मंमंमं,

ममम,ममम,

रेरेरे,रेरेरे,

सासासा,सासासा,

नीनीनी,नीनीनी,

सासासा,सासासा,

रेसान्नीऽऽरे

सान्नीऽऽरेसा

● प्रप्रप्र,प्रप्र,

नीनीनी,नीनी,

सासासा,सासा,

रेरेरे,रेरे,

ममम,मम,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

पपप,पप,

मंमंमं,मंमं,

धधध,धध,

पपप,पप,

नीनीनी,नीनी,

सांसांसां,सांसां,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

रेरेरे,रेरे,

सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनी,
धधध,धध,	पपप,पप,
ममम',मम',	पपप,पप,
ममम',मम',	ममम,मम,
रेरे,रेरे,	सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासा,
रेसानीजे	सानीजेसा
● नीसारेनीसारेनीसा	नीसारेनीसारेनीसां
ममरेममरेममं	ममरेसांनीसारेसां
रेमरेमरेसांनीसां	नीसांनीनीसांनीनीसां
नीनीधपनीनीधप	मपधमपधमप
मममपपपनीनी	धपमपधपमप
रेमरेमरेमरेसा	नीसारेमरेसानीसा
नीसारेनीसारेनीसा	नीऽऽऽनीसारेनी
सारेनीसानीऽऽऽ	नीसारेनीसारेनीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 5.1 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?
- (क) प
- (ख) नी

- (ग) ग
(घ) सा
- 5.2 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) म^१
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 5.3 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
(क) म^१
(ख) प्र
(ग) नी
(घ) सा
- 5.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
(क) मगम
(ख) रे म प
(ग) सान्नीसा
(घ) रैमरेसा
- 5.5 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
(क) श्याम कल्याण
(ख) पूरिया धनाश्री
(ग) सारंग
(घ) हंसध्वनि
- 5.6 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?
(क) कल्याण तथा यमन

(ख) सारंग तथा कल्याण

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

5.7. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म'

(ख) प्र

(ग) ध

(घ) नी

5.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा ^१रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा ^१रे म', म', प, म'प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

5.5 शब्दावली

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 5.1 (क)
 5.2 (ख)
 5.3 (ग)
 5.4 (घ)
 5.5 (क)
 5.6 (ख)
 5.7 (ग)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

5.8 अनुशासित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल की तानों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग में आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 7. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल की तानों को गा कर सुनाइए।

इकाई-6

राग शुद्ध सारंग - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

- 6.1 भूमिका
- 6.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 6.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें
 - 6.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना
 - 6.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
 - 6.3.3 शुद्ध सारंग राग का छोटा ख्याल
 - 6.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें
स्वयं जांच अभ्यास 1
- 6.4 सारांश
- 6.5 शब्दावली
- 6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 6.7 संदर्भ
- 6.8 अनुशंसित पठन
- 6.9 पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

6.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याह्न

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोहः- नी सा, रे, मं प, नी सां।

अवरोह:- सां नी, ध प, म'प, रै म रे, नि सा।

पकड़:- रै म' प, म रे, सा नी ऽ, ध, तथा प्र नि ध, सा नि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का गायन समय मध्याह्न काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रै म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रै म, म', प, म' प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, म'प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा नि ऽ)। स्वर संगति प्र नि ध, सा नि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा श्याम कल्याण में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ है जबकि श्याम कल्याण राग का वादी स्वर पंचम है। शुद्ध सारंग राग का संवादी स्वर पंचम है जबकि श्याम कल्याण राग का संवादी स्वर षड्ज है। शुद्ध सारंग राग का वादन-गायन समय मध्याह्न माना जाता है जबकि दूसरी ओर राग श्याम कल्याण का गायन वादन समय रात्रि कालीन रहता है। शुद्ध सारंग राग, वृंदावनी सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है जबकि श्याम कल्याण राग कामोद तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। शुद्ध सारंग राग की जाति औड़व-षाड़व है जबकि श्याम कल्याण राग की जाती औड़व-संपूर्ण मानी जाती है। शुद्ध सारंग राग में गंधार पूर्ण रूप से वर्जित रहता है जबकि श्याम कल्याण राग में गंधार का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यमों (शुद्ध तथा तीव्र) का प्रयोग एक साथ भी किया जाता है (सां नी ध प, म'प म म रे सा) जबकि श्याम कल्याण में तीव्र मध्यम पंचम के साथ तथा शुद्ध मध्यम गंधार के साथ लगता है (सां नी ध प, म'प ग म रे सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह करते समय ऋषभ पर मध्यम का कण लेते हैं (नी सा रै म) जो सारंग अंग की पहचान है जबकि श्याम कल्याण में ऋषभ का प्रयोग सीधा रहता है (नी सा रे म)। शुद्ध

सारंग राग में म'प रे म रे, सा का प्रयोग होता है जबकि शाम कल्याण में म प ग म रे सा का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध सारंग राग की पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है जबकि श्याम कल्याण के पूर्वांग में कामोद तथा उत्तरांग में कल्याण की छाया दिखाई देती है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा वृंदावनी सारंग में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग के अवरोह में धैवत स्वर का प्रयोग होता है (सां नी, ध प, म'प, रे म रे) जबकि वृंदावनी सारंग में धैवत स्वर पूर्ण रूप से वर्जित रहता है (सां नी, प, म प)। शुद्ध सारंग राग में केवल शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (प नी सां, सां नी ध प म'प, रे म रे सा) जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद लगते हैं, आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद (प नी सां, सां नी प म प म रे, सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में केवल शुद्ध मध्यम का ही प्रयोग होता है। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है (शुद्ध सारंग- प नी सां, सां नी ध प म'प, रे म रे सा, वृंदावनी सारंग- प नी सां, सां नी प म प म रे, प म रे सा)।

6.3.2 आलाप

- सा, नी नी सा रे म, रे नी सा, नी सा रे
म म - रे म रे नी सा नी सा।
- सा नी ध प्र, नी ध सा, नी रे, सा रे म रे,
म रे नी नी सा रे - सा, सा सा
- सा ऽ म रे, नी सा म रे, म रे सा ऽ ऽ
नी ध प्र नी सा म रे,
रे म'प रे म रे नी सा रे म'प रे म
रे प्र नी ध सा नी रे सा,

म रे म' प ध म' प रे म रे,

नी ध सा नी रे ऽ सा।

- नी सा रे म' प ऽ ऽ म' प प रे म रे म' म' ऽ ऽ म' प,

म' प ध म' प, रे म' प ध ध प,

ध प म' प रे म रे सा प म रे म' प म'

प नी ध प म रे ऽ म' प,

नी ध सा नी रे सा म रे

प म' प नी ध प, रे म'

प ध ध प ऽ ध ध प म' प,

रे म रे नी सा रे म' प ध,

म' प रे म रे म रे सा नी,

नी ध सा नी रे सा, सा, सा

- म' प नी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें म' प ऽ ऽ

मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

सां नी ध प, रे म' प रे म रे

सा नी ध सा नी रे सा, सा, सा ऽ

6.3.3 शुद्ध सारंग का छोटा ख्याल

स्थाई

अब मोरी बात मान ले पियरवा,
जाऊं तोपे वारी वारी वारी।

अन्तरा

प्रेम पिया मुख से नहीं बोलत
बिनती करत मैं हारी हारी हारी।।

x					2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
स्थाई																
												म	रे	नी	- (सा)	
												अ	ब	मो	ऽ री	
नी	-	प	-	नी	ध	सा	नी	रे	-	सा						
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त						
												नी	सा	मरे	- म'	
												मा	न	ले	ऽ पि	
म'	-	प	-	म'	प	-	(प)	रे	-	सा	रे	म'	प	नी	सां	
य	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	जा	ऊं	तो	ऽ	पे	
नी	ध	प	ध	म'	प	रे	मम	रेरे	सानी	सा						
वा	ऽ	री	वा	ऽ	री	वा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री						

6.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

- मम रेसा नीसा रेसा रेम' परे मप
- पप म'प धप म'प रेसा रेसा नीसा
- नीनी धप धम' परे मरे सान्नी सा-
- धध पध म'प रेम रेसा नीसा
- मम रेसा नीसा नीनी धप म'प रेम
रेसा नीनी सा- सा-
- नीसा रेम पनी सांसां नीध पम' परे
मरे सासा नीसा
- नीसा रेम रेसा नीसा नीध प्रध म'प नीसा
रेम' पम रेसा
- पप म'प धप म'प नीसां नीरें नीसां नीप
मम रेसा नीसा
- रेम रेम' पध म'ध म'प मरे नीरि नीसा
सान्नी पनी रेनी
- पनी सारें नीसां नीध पनी
रें मंमं रेंसां प्रेम पिया-----

- पसां नीध सांनी रें- मम
रेप पम' पप प्रेम पिया-----
- नीसा मम रेसा नीरे नीप धप पम
रेसा नीसा रेम' पसां नीध पम' धप
मंध मंप मम रेप मंप सां- नीरें
ममं रेंसां नीसां प्रेम पिया-----
- अ ब - - - - - मो - - री - - बा - - - - - त पि - य - - - र - - वा
म म रे सा - - - नी रे सा नी ध प मं ध प ध मं प म म रे सा नी सा म म रे म रे रे सा नी नी सा
- पप्र प्र,प्र पप्र, पप्र,
नीनी नी,नी नीनी, नीनी,
सासा सा,सा सासा, सासा,
रेरे रे,रे रेरे, रेरे,
मम म,म मम, मम,
रेरे रे,रे रेरे, रेरे,
ममं मं,मं ममं, ममं,
पप प,प पप, पप,
ममं मं,मं ममं, ममं,
धध ध,ध धध, धध,

पप	प,प	पप,	पप,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
रें	रें,रें	रें,	रें,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
रें	रें,रें	रें,	रें,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
रें	रें,रें	रें,	रें,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
धध	ध,ध	धध,	धध,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
मम	म,म	मम,	मम,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,

सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
रेम	रेसा	नीड	रेम
रेसा	नीड	रेम	रेसा

- प्रपप,
 - सासासा,
 - ममम,
 - मंमंमं,
 - मंमंमं,
 - पपप,
 - सांसांसां,
 - मंमंमं,
 - मंमंमं,
 - सांसांसां,
 - धधध,
 - मंमंमं,
 - मंमंमं,
 - रेरेरे,
 - नीनीनी,
प्रपप,	नीनीनी,
सासासा,	रेरेरे,
ममम,	रेरेरे,
मंमंमं,	पपप,
मंमंमं,	धधध,
पपप,	नीनीनी,
सांसांसां,	रेरेरे,
मंमंमं,	रेरेरे,
मंमंमं,	रेरेरे,
सांसांसां,	नीनीनी,
धधध,	पपप,
मंमंमं,	पपप,
मंमंमं,	ममम,
रेरेरे,	सासासा,
नीनीनी,	सासासा,

रेसात्री	ऽऽरे	सात्रीऽ	ऽरेसा
● प्रप,	प्रप,	त्रीनी,	त्रीनी,
सासा,	सासा,	रेरे,	रेरे,
मम,	मम,	रेरे,	रेरे,
ममं,	ममं,	पप,	पप,
ममं,	ममं,	धध,	धध,
पप,	पप,	नीनी,	नीनी,
सांसां,	सांसां,	रेरे,	रेरे,
ममं,	ममं,	रेरे,	रेरे,
ममं,	ममं,	रेरे,	रेरे,
सांसां,	सांसां,	नीनी,	नीनी,
धध,	धध,	पप,	पप,
ममं,	ममं,	पप,	पप,
ममं,	ममं,	मम,	मम,
रेरे,	रेरे,	सासा,	सासा,
नीनी,	नीनी,	सासा,	सासा,
रेसा	त्रीरे	सात्री	रेसा

• नीसा	रेनी	सारे	नीसा
नीसां	रेनी	सारे	नीसां
मंमं	रेमं	मरे	मंमं
मंमं	रेसां	नीसां	रेसां
रेमं	रेमं	रेसां	नीसां
नीसां	नीनी	सांनी	नीसां
नीनी	धप	नीनी	धप
मंप	धम'	पध	मंप
मंम'	मंप	पप	नीनी
धप	मंप	धप	मंप
रेम	रेम	रेम	रेसा
नीसा	रेम	रेसा	नीसा
नीसा	रेनी	सारे	नीसा
नीऽ	ऽऽ	नीसा	रेनी
सारे	नीसा	नीऽ	ऽऽ
नीसा	रेनी	सारे	नीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) श्याम कल्याण

- (ख) पूरिया धनाश्री
(ग) सारंग
(घ) हंसध्वनि
- 6.2 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?
(क) कल्याण तथा यमन
(ख) सारंग तथा कल्याण
(ग) सोहनी तथा पूरिया
(घ) पूरिया तथा मारवा
- 6.3. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) म'
(ख) प्र
(ग) ध
(घ) नी
- 6.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
(क) मगम
(ख) रे म प
(ग) सान्नीसा
(घ) रैमरेसा
- 6.5 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) प
(ख) नी
(ग) ग
(घ) सा
- 6.6 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

6.7 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प्र

(ग) नी

(घ) सा

6.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रे म, म, प, म प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

6.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 6.1 (क)
 6.2 (ख)
 6.3 (ग)
 6.4 (घ)
 6.5 (क)
 6.6 (ख)
 6.7 (ग)

6.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.8 अनुशासित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998). नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-7

राग शुद्ध सारंग - विलम्बित गत

इकाई की रूपरेखा

- 7.1 भूमिका
- 7.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 7.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े
 - 7.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना
 - 7.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
 - 7.3.3 शुद्ध सारंग राग का विलम्बित गत
 - 7.3.4 शुद्ध सारंग राग की तोड़े
- स्वयं जांच अभ्यास 1
- 7.4 सारांश
- 7.5 शब्दावली
- 7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 7.7 संदर्भ
- 7.8 अनुशंसित पठन
- 7.9 पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- शुद्ध सारंग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

7.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याह्न

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोह:- नी सा, रे, म'प, नी सा।

अवरोह:- सां नी, ध प, म'प, रे मरे, नि सा।

पकड़:- रे म' प, मरे, सा नी ऽ, ध, तथा प्र नि ध, सा नि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का गायन समय मध्याह्न काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रे म, म, प, म प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, म प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा नि ५)। स्वर संगति प्र नि ध, सा नि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा श्याम कल्याण में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ है जबकि श्याम कल्याण राग का वादी स्वर पंचम है। शुद्ध सारंग राग का संवादी स्वर पंचम है जबकि श्याम कल्याण राग का संवादी स्वर षड्ज है। शुद्ध सारंग राग का वादन-गायन समय मध्याह्न माना जाता है जबकि दूसरी ओर राग श्याम कल्याण का गायन वादन समय रात्रि कालीन रहता है। शुद्ध सारंग राग, वृंदावनी सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है जबकि श्याम कल्याण राग कामोद तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। शुद्ध सारंग राग की जाति औड़व-षाड़व है जबकि श्याम कल्याण राग की जाती औड़व-संपूर्ण मानी जाती है। शुद्ध सारंग राग में गंधार पूर्ण रूप से वर्जित रहता है जबकि श्याम कल्याण राग में गंधार का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यमों (शुद्ध तथा तीव्र) का प्रयोग एक साथ भी किया जाता है (सां नी ध प, म प म म रे सा) जबकि श्याम कल्याण में तीव्र मध्यम पंचम के साथ तथा शुद्ध मध्यम गंधार के साथ लगता है (सां नी ध प, म प ग म रे सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह करते समय ऋषभ पर मध्यम का कण लेते हैं (नी सा रे म) जो सारंग अंग की पहचान है जबकि श्याम कल्याण में ऋषभ का प्रयोग सीधा रहता है (नी सा रे म)। शुद्ध सारंग राग में म प रे म रे, सा का प्रयोग होता है जबकि श्याम कल्याण में म प ग म रे सा का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध

सारंग राग की पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है जबकि श्याम कल्याण के पूर्वांग में कामोद तथा उत्तरांग में कल्याण की छाया दिखाई देती है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा वृंदावनी सारंग में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग के अवरोह में धैवत स्वर का प्रयोग होता है (सां नी, ध प, म' प, रै म रे) जबकि वृंदावनी सारंग में धैवत स्वर पूर्ण रूप से वर्जित रहता है (सां नी, प, म प)। शुद्ध सारंग राग में केवल शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा) जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद लगते हैं, आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद (प नी सां, सां नी प म प म रे, सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में केवल शुद्ध मध्यम का ही प्रयोग होता है। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है (शुद्ध सारंग- प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा, वृंदावनी सारंग- प नी सां, सां नी प म प म रे, प म रे सा)।

7.3.2 आलाप

- सा, नी नी सा रे म, रे नी सा, नी सा रे
म म - रे म रे नी सा नी सा।
- सा नी ध प्र, नी ध सा, नी रे, सा रे म रे,
म रे नी नी सा रे - सा, सा सा
- सा ऽ म रे, नी सा म रे, म रे सा ऽ ऽ
नी ध प्र नी सा म रे,
रे म' प रे म रे नी सा रे म' प रे म
रे प्र नी ध सा नी रे सा,
म रे म' प ध म' प रे म रे,

नी ध सा नी रे ऽ सा।

- नी सा रे म' प ऽ ऽ म' प प रे म रे म' म' ऽ ऽ म' प,

म' प ध म' प, रे म' प ध ध प,

ध प म' प रे म रे सा प म रे म' प म'

प नी ध प म रे ऽ म' प,

नी ध सा नी रे सा म रे

प म' प नी ध प, रे म'

प ध ध प ऽ ध ध प म' प,

रे म रे नी सा रे म' प ध,

म' प रे म रे म रे सा नी,

नी ध सा नी रे सा, सा, सा

- म' प नी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें म' प ऽ ऽ

मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

सां नी ध प, रे म' प रे म रे

सा नी ध सा नी रे सा, सा, सा ऽ

7.3.3 शुद्ध सारंग विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3				
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
स्थाई												रेम	रे	निसा	नि	निनिध्रमप
												दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	नि	सा	निम	रे	मम'	प	धमप	रेम	रे	निसा						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा						
अन्तरा												निसा	रे	मम'	प	नि
												दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	(सां)	नि	सांसां	रें	मं	रें	निरें	सां						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा						
												निसां	रें	ममं	रें	सा
												दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	ध	प	मप	नि	सांसां	नि	धप	मम	उरे	निसा						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा						

7.3.4 शुद्ध सारंग राग के तोड़े

● नीनीसा-	नीरिनीसा	रेमपध	मपमरे
नीनीनीरे	नीसारेम	पधमप	मपमरे
नीरिसानी	प्रनीसारे	मरेसानी	रे-सा-
रेमपनी	पधमप	नीधसांनी	रे-मपं
सांनीधप	ममरेनी	रेनीसा-	नीधसा-
नीरिसा-			
● निसा	रेसा	निसा	रेरे
मम	रेसा	निसा	रेसा
● नी	ऽ	सा	ऽ,
मरे	-	रेम	-,
मरे	-	सा	-
नी	धप्र	मप्र	नी
नी	-	-	नीनी,
सा	-	-	-
रेम	रेसा	नीसा	नीनी
धप्र	मप्र	नी	नी
सा	नी	रेसा	नीसा

नीध	सान्नी	रे	सा
● नीसारे	मरेसा	नीसा-	रेमप
धमप	रेमरे	सान्नीसा	रेनीसा
ममरेसा	रेमरेसा	नीधसान्नी	रेसा--
रेमपध	मपरेम	पनीधप	ममरेसा
पनीसांनी	धपमप	रेमपनी	सारिंसांनी
धपमप	रेमपध	मपरेम	रेसान्नीसा
नीधप्र-	मपनीसा	नीधसान्नी	रेसान्नीसा
सांनीसांप	नीसांनीध	पमप-	ममरेसा
सान्नीधप्रमपनीसा		मरेनीधसान्नीरेसा	
नीनीधपरेमरेसा		पनीसांनीरिमरेसा	
ममरेसाममरेसा		रेमरेसारेमरेसा	
नीधसान्नीनीध		सान्नीनीधसान्नी	
● प्रपप्र,पप्रप्र,पप्र,		नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	
सासासा,सासासा,सासा,		रेरे,रेरे,रे,	
ममम,ममम,मम,		रेरे,रेरे,रे,	
ममम,ममम,मम,		पपप,पपप,पप,	
ममम,ममम,मम,		धधध,धधध,धध,	

पपप,पपप,पप,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेरेरे,रेरेरे,रेरे,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
धधध,धधध,धध,	पपप,पपप,पप,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	पपप,पपप,पप,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	ममम,ममम,मम,
रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासासा,सासा,
रेमरेसान्नीऽरेम	रेसान्नीऽरेमरेसा
● प्रप्रप्र,प्रप्रप्र,	नीनीनी,नीनीनी,
सासासा,सासासा,	रेरेरे,रेरेरे,
ममम,ममम,	रेरेरे,रेरेरे,
मंमंमं,मंमंमं,	पपप,पपप,
मंमंमं,मंमंमं,	धधध,धधध,
पपप,पपप,	नीनीनी,नीनीनी,
सांसांसां,सांसांसां,	रेरेरे,रेरेरे,

मंमंमं,मंमंमं,

रेरेरे,रेरेरे,

मंमंमं,मंमंमं,

रेरेरे,रेरेरे,

सांसांसां,सांसांसां,

नीनीनी,नीनीनी,

धधध,धधध,

पपप,पपप,

मंमंमं,मंमंमं,

पपप,पपप,

मंमंमं,मंमंमं,

ममम,ममम,

रेरेरे,रेरेरे,

सासासा,सासासा,

नीनीनी,नीनीनी,

सासासा,सासासा,

रेसान्नीऽऽरे

सान्नीऽऽरेसा

● प्रप्रप्र,प्रप्र,

नीनीनी,नीनी,

सासासा,सासा,

रेरेरे,रेरे,

ममम,मम,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

पपप,पप,

मंमंमं,मंमं,

धधध,धध,

पपप,पप,

नीनीनी,नीनी,

सांसांसां,सांसां,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

रेरेरे,रेरे,

मंमंमं,मंमं,

रेरेरे,रेरे,

सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनी,
धधध,धध,	पपप,पप,
मंमंमं,मंमं,	पपप,पप,
मंमंमं,मंमं,	ममम,मम,
रेरे,रेरे,	सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासा,
रेसानीजे	सानीजेसा

- नीसारेनीसारेनीसा नीसारेनीसारेनीसां
- मंमंमंमंमंमं मंमंमंमंमंमंमं
- रेमंमंमंमंमंमं नीसांनीनीसांनीनीसां
- नीनीधपनीनीधप मंमंमंमंमंमंमं
- मंमंमंमंमंमंमं धपमंमंमंमंमं
- रेमरेमरेमरेसा नीसारेमरेसानीसा
- नीसारेनीसारेनीसा नीऽऽऽनीसारेनी
- सारेनीसानीऽऽऽ नीसारेनीसारेनीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 7.1 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
- (क) श्याम कल्याण
- (ख) पूरिया धनाश्री

- (ग) सारंग
(घ) हंसध्वनि
- 7.2 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?
(क) कल्याण तथा यमन
(ख) सारंग तथा कल्याण
(ग) सोहनी तथा पूरिया
(घ) पूरिया तथा मारवा
- 7.3. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?
(क) मं
(ख) प्र
(ग) ध
(घ) नी
- 7.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
(क) मगम
(ख) रे म प
(ग) सान्नीसा
(घ) रैमरेसा
- 7.5 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?
(क) प
(ख) नी
(ग) ग
(घ) सा
- 7.6 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) मं

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

7.7 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प्र

(ग) नी

(घ) सा

7.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रे म, म, प, म प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

7.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 7.1 (क)
 7.2 (ख)
 7.3 (ग)
 7.4 (घ)
 7.5 (क)
 7.6 (ख)
 7.7 (ग)

7.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

7.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-8

राग शुद्ध सारंग - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

- 8.1 भूमिका
- 8.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 8.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े
 - 8.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना
 - 8.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
 - 8.3.3 शुद्ध सारंग राग का द्रुत गत
 - 8.3.4 शुद्ध सारंग राग की तोड़े
स्वयं जांच अभ्यास 1
- 8.4 सारांश
- 8.5 शब्दावली
- 8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 8.7 संदर्भ
- 8.8 अनुशंसित पठन
- 8.9 पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

8.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय तथा तुलना

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याह्न

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोह:- नी सा, रै, म'प, नी सा।

अवरोह:- सां नी, ध प, म'प, रै मरे, नि सा।

पकड़:- रै म' प, मरे, सा नी ऽ, ध, तथा प्र नि ध, सा निरे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का गायन समय मध्याह्न काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रे म, म, प, म प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, म प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा नि ५)। स्वर संगति प्र नि ध, सा नि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा श्याम कल्याण में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ है जबकि श्याम कल्याण राग का वादी स्वर पंचम है। शुद्ध सारंग राग का संवादी स्वर पंचम है जबकि श्याम कल्याण राग का संवादी स्वर षड्ज है। शुद्ध सारंग राग का वादन-गायन समय मध्याह्न माना जाता है जबकि दूसरी ओर राग श्याम कल्याण का गायन वादन समय रात्रि कालीन रहता है। शुद्ध सारंग राग, वृंदावनी सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है जबकि श्याम कल्याण राग कामोद तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। शुद्ध सारंग राग की जाति औड़व-षाड़व है जबकि श्याम कल्याण राग की जाती औड़व-संपूर्ण मानी जाती है। शुद्ध सारंग राग में गंधार पूर्ण रूप से वर्जित रहता है जबकि श्याम कल्याण राग में गंधार का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यमों (शुद्ध तथा तीव्र) का प्रयोग एक साथ भी किया जाता है (सां नी ध प, म प म म रे सा) जबकि श्याम कल्याण में तीव्र मध्यम पंचम के साथ तथा शुद्ध मध्यम गंधार के साथ लगता है (सां नी ध प, म प ग म रे सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह करते समय ऋषभ पर मध्यम का कण लेते हैं (नी सा रे म) जो सारंग अंग की पहचान है जबकि श्याम कल्याण में ऋषभ का प्रयोग सीधा रहता है (नी सा रे म)। शुद्ध सारंग राग में म प रे म रे, सा का प्रयोग होता है जबकि श्याम कल्याण में म प ग म रे सा का प्रयोग किया जाता है। शुद्ध

सारंग राग की पूर्वांग में सारंग तथा उत्तरांग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है जबकि श्याम कल्याण के पूर्वांग में कामोद तथा उत्तरांग में कल्याण की छाया दिखाई देती है।

अगर हम शुद्ध सारंग तथा वृंदावनी सारंग में तुलना करें तो शुद्ध सारंग राग के अवरोह में धैवत स्वर का प्रयोग होता है (सां नी, ध प, म' प, रै म रे) जबकि वृंदावनी सारंग में धैवत स्वर पूर्ण रूप से वर्जित रहता है (सां नी, प, म प)। शुद्ध सारंग राग में केवल शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा) जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद लगते हैं, आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद (प नी सां, सां नी प म प म रे, सा)। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में केवल शुद्ध मध्यम का ही प्रयोग होता है। शुद्ध सारंग राग में आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है (शुद्ध सारंग- प नी सां, सां नी ध प म' प, रै म रे सा, वृंदावनी सारंग- प नी सां, सां नी प म प म रे, प म रे सा)।

8.3.2 आलाप

- सा, नी नी सा रे म, रे नी सा, नी सा रे
म म - रे म रे नी सा नी सा।
- सा नी ध प्र, नी ध सा, नी रे, सा रे म रे,
म रे नी नी सा रे - सा, सा सा
- सा ऽ म रे, नी सा म रे, म रे सा ऽ ऽ
नी ध प्र नी सा म रे,
रे म' प रे म रे नी सा रे म' प रे म
रे प्र नी ध सा नी रे सा,
म रे म' प ध म' प रे म रे,

नी ध सा नी रे ऽ सा।

- नी सा रे म' प ऽ ऽ म' प प रे म रे म' म' ऽ ऽ म' प,

म' प ध म' प, रे म' प ध ध प,

ध प म' प रे म रे सा प म रे म' प म'

प नी ध प म रे ऽ म' प,

नी ध सा नी रे सा म रे

प म' प नी ध प, रे म'

प ध ध प ऽ ध ध प म' प,

रे म रे नी सा रे म' प ध,

म' प रे म रे म रे सा नी,

नी ध सा नी रे सा, सा, सा

- म' प नी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें म' प ऽ ऽ

मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

सां नी ध प, रे म' प रे म रे

सा नी ध सा नी रे सा, सा, सा ऽ

8.3.3 शुद्ध सारंग द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3				
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
स्थाई																
												म	रे	नि	ऽनि	सा
												दा	रा	दा	ऽर	दा
नि	ऽ	ऽ	प्र	नि	ध	सा	नि	रे	ऽ	सा						
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा						
												नि	सा	रे	ऽ	म'
												दा	रा	दा	ऽ	रा
प	ऽ	ऽ	प	म'	पप	म'म'	धध	पऽ	प म'	पऽ						
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	दाऽ						
अन्तरा																
								रेऽ	ऽरे	रेऽ	म'ऽ	ऽम'	म'ऽ	प	नि	
								दाऽ	ऽर	दाऽ	दाऽ	ऽर	दाऽ	दा	रा	
सांऽ	ऽसां	सांऽ	सांऽ	नि	रेँ	सां	ऽ									
दाऽ	ऽरा	दाऽ	राऽ	दा	दिर	दा	ऽ									
								नि	सांसां	रेँ	ममं	रेँऽ	रेसां	ऽसां	निऽ	
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	
धऽ	ध म'	ऽम'	पऽ	रे	मम	रे	सा	नि	ऽ	ऽ						
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	ऽ						

8.3.4 शुद्ध सारंग राग के तोड़े

● प्रप्र	प्र,प्र	प्रप्र,	प्रप्र,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
मम	म,म	मम,	मम,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
ममं	मं,मं	ममं,	ममं,
पप	प,प	पप,	पप,
ममं	मं,मं	ममं,	ममं,
धध	ध,ध	धध,	धध,
पप	प,प	पप,	पप,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
रें	रें,रें	रें,	रें,
ममं	मं,मं	ममं,	ममं,
रें	रें,रें	रें,	रें,
ममं	मं,मं	ममं,	ममं,

रें	रें,रें	रें,	रें,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
धध	ध,ध	धध,	धध,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
मम	म,म	मम,	मम,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
रेम	रेसा	नीऽ	रेम
रेसा	नीऽ	रेम	रेसा

- प्रप्रप्र, प्रप्रप्र, नीनीनीनी, नीनीनीनी,
- सासासा, सासासा, रेंरेंरें, रेंरेंरें,
- ममम, ममम, रेंरेंरें, रेंरेंरें,

मंमंमं,	मंमंमं,	पपप,	पपप,
मंमंमं,	मंमंमं,	धधध,	धधध,
पपप,	पपप,	नीनीनी,	नीनीनी,
सांसांसां,	सांसांसां,	रेरेरे,	रेरेरे,
मंमंमं,	मंमंमं,	रेरेरे,	रेरेरे,
मंमंमं,	मंमंमं,	रेरेरे,	रेरेरे,
सांसांसां,	सांसांसां,	नीनीनी,	नीनीनी,
धधध,	धधध,	पपप,	पपप,
मंमंमं,	मंमंमं,	पपप,	पपप,
मंमंमं,	मंमंमं,	ममम,	ममम,
रेरेरे,	रेरेरे,	सासासा,	सासासा,
नीनीनी,	नीनीनी,	सासासा,	सासासा,
रेसान्नी	ऽऽरे	सान्नीऽ	ऽरेसा
● प्रप,	प्रप,	नीनी,	नीनी,
सासा,	सासा,	रेरे,	रेरे,
मम,	मम,	रेरे,	रेरे,
मंमं,	मंमं,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	धध,	धध,

पप,	पप,	नीनी,	नीनी,
सांसां,	सांसां,	रें,	रें,
मंमं,	मंमं,	रें,	रें,
मंमं,	मंमं,	रें,	रें,
सांसां,	सांसां,	नीनी,	नीनी,
धध,	धध,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	मम,	मम,
रेरे,	रेरे,	सासा,	सासा,
नीनी,	नीनी,	सासा,	सासा,
रेसा	नीरे	सात्री	रेसा
● नीसा	रेनी	सारे	नीसा
नीसां	रेंनी	सारें	नीसां
मंमं	रेंमं	मरें	मंमं
मंमं	रेंसां	नीसां	रेंसां
रेंमं	रेंमं	रेंसां	नीसां
नीसां	नीनी	सांनी	नीसां
नीनी	धप	नीनी	धप

मंप	धम'	पध	मंप
मम'	मंप	पप	नीनी
धप	मंप	धप	मंप
रेम	रेम	रेम	रेसा
नीसा	रेम	रेसा	नीसा
नीसा	रेनी	सारे	नीसा
नीऽ	ऽऽ	नीसा	रेनी
सारे	नीसा	नीऽ	ऽऽ
नीसा	रेनी	सारे	नीसा
● मम	रेसा	नीसा	नीनी
धप	मंप	रेम	
रेसा	नीनी	सा-	सा-
● नीनी	धप	धम'	परे
मरे	सान्नी	सा-	
● मम	रेसा	नीसा	रेसा
रेम'	परे	मप	
● पप	मंप	धप	मंप
रेसा	रेसा	नीसा	

● धध	पध	मंप	रेम
रेसा	नीसा		
● नीसा	रेम	पनी	सांसां
नीध	पम'	परे	
मरे	सासा	नीसा	
● नीसा	रेम	रेसा	नीसा
नीध	प्रध	मंप	नीसा
रेम'	पम	रेसा	
● पप	मंप	धप	मंप
नीसां	नीरें	नीसां	नीप
मम	रेसा	नीसा	
● रेम	रेम'	पध	मंध
मंप	मरे	नीरे	नीसा
साज्ञी	पनी	रेनी	
● पनी	सारें	नीसां	नीध
पनी	रें	मंमं	रेंसां
● पसां	नीध	सांनी	रें-
मम	रेप	पम'	पप

● नीसा	मम	रेसा	नीरे
नीप	धप	पम	
रेसा	नीसा	रेम'	पसां
नीध	पम'	धप	
● मध	मप	मम	रेप
मप	सां-	नीरे	
ममं	रेसां	नीसां	
● मम	रेम	मरे	नीसा
ममं	रेमं	मरे	नीसां
नीनी	धप	मप	धप
मम	रेम	रेसा	नीसा
ऽऽ	नीसा	नीऽ	नीसा
नीऽ	नीसा	नीऽ	ऽऽ
नीसा	नीऽ	नीसा	नीऽ
नीसा	नीऽ	ऽऽ	नीसा
नीऽ	नीसा	नीऽ	नीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) प

- (ख) नी
(ग) ग
(घ) सा
- 8.2 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?
(क) मं
(ख) रे
(ग) ग
(घ) सा
- 8.3 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?
(क) मं
(ख) प्र
(ग) नी
(घ) सा
- 8.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?
(क) मगम
(ख) रे म प
(ग) सान्नीसा
(घ) रैमरेसा
- 8.5 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?
(क) श्याम कल्याण
(ख) पूरिया धनाश्री
(ग) सारंग
(घ) हंसध्वनि
- 8.6 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?

- (क) कल्याण तथा यमन
- (ख) सारंग तथा कल्याण
- (ग) सोहनी तथा पूरिया
- (घ) पूरिया तथा मारवा

8.7. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

- (क) मं
- (ख) प्र
- (ग) ध
- (घ) नी

8.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्रायः आरम्भ किया जाता है। (नी सा रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (नी सा रे म, म, प, म'प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

8.5 शब्दावली

- द्रुत गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 8.1 (क)
 8.2 (ख)
 8.3 (ग)
 8.4 (घ)
 8.5 (क)
 8.6 (ख)
 8.7 (ग)

8.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

8.8 अनुशासित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-9

राग बागेश्री - विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)
9.3.1	बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना (वादन के संदर्भ में)
9.3.2	बागेश्री राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
9.3.3	बागेश्री राग की विलम्बित गत
9.3.4	बागेश्री राग की विलम्बित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशासित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी परिचित हो जाएगा

- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)

9.3.1 बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ङी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म प ध ग, म ग रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध गु, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा गु म ध, नी सा गु म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म गु रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध गु, म गु रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध नी सा म, गु म ध नी ध तथा म प ध गु ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध गु की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध गु, रे सा। बागेश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध नी सा म या ध नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म गु, म ध नी ध, म प ध गु, म गु रे सा। रागेश्री - नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

9.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध - सा रे सा,
- ध नी नी ध नी सा, सा नी ध म - ,

- म ध नी नी सा, सा,
- ध नी सा म ग – म ग रे सा
- सा नी ध नी ध -, म म ध,
म ध नी नी सा, सा
- ध नी सा म -, ग म ग रे सा,
ग म ग – ग म ध – म ग, म ग रे सा
- म ग ध, ध म – ध नी ध म,
म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,
मं गं रें सां सां, सां नी सां ऽ ऽ
- सां नी ध नी ध – म प ध ग – म ग रे सा,
ध नी नी सा म ग रे सा, सा

9.3.3 बागेश्री

विलंबित गत

तीन ताल

x				2				0				3				
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
स्थाई												गुम	गु	रेरे	सा	धनी
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
सा	सा	सा	गुम	ध	मम	नी	ध	म	गुरे	सा						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा						
अन्तरा												मम	गु	मम	ध	नीनी
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	रे	सां	ध	नीनी	ध						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	रा						
												गंगं	मं	गरें	सां	नीसां
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
रे	सां	सां	धनी	ध	मम	प	ध	गु	रेरे	सा						
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा						

9.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- सम से सम तक

साऽसा नीऽनी

गऽग मऽम

धऽधनीऽनी

साऽसागंऽगं

मऽमगंऽगं

रेऽरेसांऽसां

नीऽऽनीधऽऽध

नीऽऽनीधऽऽध

मऽऽमधऽऽध

गऽऽगमऽऽम

गऽऽगरेऽऽरे

साऽऽसानीऽऽनी

धऽऽधमऽऽम

धऽऽधनीऽऽनी

साऽऽऽनीऽऽनी

साऽऽऽनीऽऽनी

- 12वीं मात्रा से सम तक

धनीसानी

सा---

धनीसानी

सा---

धनीसानी

- पाँचवीं मात्रा से गत तक

सानीधनी

रेसानीसा

मगरेसा

धमगम

नीधसांनी

धमगम

गरेसा-

- सम से सम तक

मगरेसा

गरेसान्नी

रेसान्नीध

सान्नीधनी

सासान्नीसा

गगसाग

ममगम

धधमध

नीनीधनी

सांसांनीसां

गंगरेसां

नीधसांनी

धनीधम

गमधनी

सांनीधम

धमगरे

- सम से गत तक

सान्नीधनी

रेसान्नीध

मगरेसा

धमगम

नीधनीध

सांनीसांनी

रेसारेंसां

नीधनीध

सासाधनी

धमगम

गरेसा-

- सम से सम तक

नीसागग

गमधध

धनीसांसां

रेसांनीसां

मगरेसा

नीसाधनी

रेसाननीसा

मगरेसा

सागमम

मधनीनी

नीसांगंगं

धनीधम

मगरेसा

सा-मग

धनीसा-

नीसाधनी

- सम से सम तक

नीनीनी

गगग

धधध

सांसांसां

मंमंमं

रेरेरे

नीनीनी

नीनीनी

ममम

सासासा

ममम

नीनीनी

गंगंगं

गंगंग

सांसांसां

धधध

धधध

धधध

गगग

ममम

गगग

रेरेरे

सासासा

नीनीनी

धधध

ममम

धधध

नीनीनी

सासासा

नीनीनी

सासासा

नीनीनी

- सम से सम तक

नीनीनीनी

सासासासा

गगगग

मममम

धधधध

नीनीनीनी

सांसांसांसां

गंगंगंगं

मंमंमंमं

गंगंगंगं

रेरेरेरे

सांसांसांसां

नीनीनीनी

धधधध

नीनीनीनी

धधधध

मममम

धधधध

गगगग

मममम

गगगग

रेरेरे

सासासासा

नीनीनीनी

धधधध

मममम

धधधध

नीनीनीनी

सासासासा

नीनीनीनी

सासासासा

नीनीनीनी

- सम से सम तक

सासासासानीनीनीनी

गगगगमममम

धधधधनीनीनीनी

सांसांसांसांगंगंगंगं

मंमंमंगंगंगंगं

रेरेरेसांसांसांसां

नीनीनीनीधधधध

नीनीनीनीधधधध

ममममधधधध

गगगगमममम

गगगगरेरेरे

सासासासानीनीनीनी

धधधधमममम

धधधधनीनीनीनी

साऽऽऽनीनीनीनी

साऽऽऽनीनीनीनी

- खाली से सम तक

धधधनीनीनी

सासासानीनीनी

सासासागगग

रेरेरेसासासा

नीनीनीसासासा

धधधनीनीनी

मंमंमंगंगं

नीनीनीधधध

मममधधध

गगगरेरेरे

धधधममम

गगगरेरेरे

नीऽऽनीऽऽ

नीऽऽसाऽऽ

• ऽनीनीनी

ऽगगग

ऽधधध

ऽसांसांसां

ऽनीनीनी

ऽनीनीनी

ऽममम

ऽगगग

गगगममम

सांसांसांगंगं

रेरेरेसांसांसां

नीनीनीधधध

गगगममम

सासासानीनीनी

धधधनीनीनी

नीनीनीसासासा

साऽऽनीऽऽ

नीऽऽनीऽऽ

ऽसासासा

ऽममम

ऽनीनीनी

ऽरेरेरे

ऽधधध

ऽधधध

ऽधधध

ऽममम

<u>ऽगगग</u>	ऽरेरे
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽधधध	ऽममम
ऽधधध	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 9.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
- क) म
ख) नि
ग) नी
घ) ग
- 9.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
- क) रे
ख) सा
ग) प
घ) म
- 9.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?
- क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर

- 9.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) कोई भी नहीं
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) गंधार
- 9.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?
क) रे
ख) ग
ग) म
घ) नी
- 9.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?
क) कल्याण
ख) काफी
ग) भैरवी
घ) तोड़ी
- 9.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?
क) ध नि ध प, म ग
ख) ध सां नि ध प, म ग
ग) नि ध म प ध ग
घ) ध नि सां नी ध म ग
- 9.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?
क) 9
ख) 16
ग) 2

- घ) 1
- 9.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
क) नहीं
ख) हां
- 9.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।
क) सही
ख) गलत
- 9.11 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?
क) कल्याण
ख) काफी
ग) रागेश्री
घ) श्री
- 9.12 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
क) संपूर्ण संपूर्ण
ख) षाडव संपूर्ण
ग) संपूर्ण औडव
घ) औडव संपूर्ण
- 9.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
- 9.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

- ख) बागेश्री में ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- ग) बागेश्री में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

9.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

- क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।
- ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
- ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
- घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

9.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थोट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।

- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आयन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1	उत्तर: क)
9.2	उत्तर: ख)
9.3	उत्तर: ग)
9.4	उत्तर: घ)
9.5	उत्तर: क)
9.6	उत्तर: ख)
9.7	उत्तर: ग)
9.8	उत्तर: घ)
9.9	उत्तर: क)
9.10	उत्तर: ख)
9.11	उत्तर: ग)
9.12	उत्तर: घ)

- 9.13 उत्तर: क)
9.14 उत्तर: ख)
9.15 उत्तर: ग)

9.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

बन्धोपाध्याय, श्रीपद. (1957). सितार मार्ग (भाग 1-4), भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-10

राग बागेश्री की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	राग बागेश्री
10.3.1	बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना
10.3.2	बागेश्री राग का आलाप
10.3.3	बागेश्री राग की द्रुत गत
10.3.4	बागेश्री राग की द्रुत गत के तोड़े स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)

10.3.1 बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म प ध गु, म ग रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध गु, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है।

इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ५ गु, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध नी सा म, गु म ध नी ध तथा म प ध गु ५ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध गु की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध गु, रे सा। बागेश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध नी सा म या ध नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म गु, म ध नी ध, म प ध गु, म ग रे सा। रागेश्री - नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

10.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध - सा रे सा,
- ध नी नी ध नी सा, सा नी ध म -,

म ध नी नी सा, सा,

- ध नी सा म ग – म ग रे सा

- सा नी ध नी ध -, म म ध,

म ध नी नी सा, सा

- ध नी सा म -, ग म ग रे सा,

ग म ग – ग

म ध – म ग, म ग रे सा

- म ग ध, ध म – ध नी ध म,

म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

मं गं रें सां सां, सां सां

- सां नी ध नी ध – म प ध

ग – म ग रे सा,

ध नी नी सा म ग रे सा, सा

10.3.2 बागेश्री द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
												सां	<u>नीनी</u>	ध	<u>नी</u>
												दा	दिर	दा	दा
ध	-	म	<u>ग</u>	म	<u>गग</u>	रे	सा	नी	सा	म	-				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-				
												<u>ग</u>	मम	ध	<u>नी</u>
												दा	दिर	दा	दा
सां	<u>नीनी</u>	ध	म	प	ध	<u>ग</u>	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				
अन्तरा															
												<u>ग</u>	मम	ध	<u>नी</u>
												दा	दिर	दा	दा
सां	-	सां	सां	<u>नी</u>	सांसां	गं	रें	सां	<u>नीनी</u>	ध	म				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा				
												गं	रेंरें	सां	रें
												दा	दिर	दा	दा
सां	<u>नीनी</u>	ध	म	प	ध	<u>ग</u>	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				

10.3.4 बागेश्री राग की द्रुत गत के तांडे

- सम से गत तक

सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>	ध-	--
सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>	ध-	--
सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>	ध-	--

- सम से सम तक

ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>	सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>
ध-	--	ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>
सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>	ध-	--
ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>	सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>

- पाँचवी मात्रा से गत तक

ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>	सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>
सां-	सां-	सां-	--
ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>	सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>
सां-	सां-	सां-	--
ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>	सां <u>नी</u>	ध <u>नी</u>
सां-	सां-	सां-	--

- सम से सम तक

नीसा	गम	धनी	धम
गम	धम	गरे	सासा
नीसा	गम	ध-	नीसा
गम	ध-	नीसा	गम

- सम से सम तक

सांनी	धनी	धम	पध
ग-	मग	रेसा	नीसा
गम	गम	ध-	गम
गम	ध-	गम	गम

- सम से गत तक

धनी	सा,ध	नीसा,	धनी,
गम	ध,ग	मध,	गम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,
धनी	सांनी	धम	गम
धम	गम	गरे	सासा
गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी

- सम से सम तक

ध <u>नी</u>	सा <u>ग</u>	नी <u>सा</u>	ग <u>म</u>
सा <u>ग</u>	मध	ग <u>म</u>	ध <u>नी</u>
मध	नी <u>सां</u>	ध <u>नी</u>	सा <u>गं</u>
रे <u>सां</u>	नी <u>सां</u>	नी <u>ध</u>	नी <u>ध</u>
म <u>ग</u>	म <u>ग</u>	रे <u>सा</u>	नी <u>सा</u>
ग <u>-</u>	ग <u>म</u>	ध <u>-</u>	--
नी <u>सा</u>	ग <u>-</u>	ग <u>म</u>	ध <u>-</u>
--	नी <u>सा</u>	ग <u>-</u>	ग <u>म</u>

- नीनी
नी <u>नी</u>	नी <u>नी</u>	सा <u>सा</u>	सा <u>सा</u>
ग <u>ग</u>	ग <u>ग</u>	म <u>म</u>	म <u>म</u>
ध <u>ध</u>	ध <u>ध</u>	नी <u>नी</u>	नी <u>नी</u>
सा <u>सां</u>	सा <u>सां</u>	ग <u>गं</u>	ग <u>गं</u>
म <u>मं</u>	म <u>मं</u>	ग <u>गं</u>	ग <u>गं</u>
रे <u>ं</u>	रे <u>ं</u>	सा <u>सां</u>	सा <u>सां</u>
नी <u>नी</u>	नी <u>नी</u>	ध <u>ध</u>	ध <u>ध</u>
नी <u>नी</u>	नी <u>नी</u>	ध <u>ध</u>	ध <u>ध</u>
म <u>म</u>	म <u>म</u>	ध <u>ध</u>	ध <u>ध</u>

<u>गग</u>	<u>गग</u>	मम	मम
<u>गग</u>	<u>गग</u>	रेरे	रेरे
सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
धध	धध	मम	मम
धध	धध	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
● सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
<u>गग</u>	<u>गग</u>	मम	मम
धध	धध	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
सांसां	सांसां	<u>गंगं</u>	<u>गंगं</u>
ममं	ममं	<u>गंगं</u>	<u>गंगं</u>
रेरे	रेरे	सांसां	सांसां
<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>	धध	धध
<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>	धध	धध
मम	मम	धध	धध
<u>गग</u>	<u>गग</u>	मम	मम
<u>गग</u>	<u>गग</u>	रेरे	रेरे

सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
धध	धध	मम	मम
धध	धध	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
साऽ	ऽऽ	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
साऽ	ऽऽ	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>

- साऽसा नीऽनी
- गऽग मऽम
- धऽध नीऽनी
- सांऽसां गंऽगं
- मंऽमं गंऽगं
- रेंऽरें सांऽसां
- नीऽऽ नीधऽ
- ऽधनी ऽऽनी
- धऽऽ धमऽ
- ऽमध ऽऽध
- गऽऽ गमऽ
- ऽमग ऽऽग
- रेऽऽ रेसाऽ

<u>ऽसान्नी</u>	<u>ऽऽन्नी</u>
धऽऽ	धमऽ
ऽमध	ऽऽध
<u>न्नीऽऽ</u>	<u>न्नीसाऽ</u>
<u>ऽऽन्नी</u>	<u>ऽऽन्नी</u>
साऽऽ	<u>ऽन्नीऽ</u>
<u>ऽन्नीऽ</u>	साऽऽ

- खाली से सम तक

धधध	<u>न्नीन्नीन्नी</u>	सासासा	<u>न्नीन्नीन्नी</u>
सासासा	<u>गगग</u>	रेरेरे	सासासा
<u>न्नीन्नीन्नी</u>	सासासा	<u>गगग</u>	ममम
धधध	<u>नीनीनी</u>	सांसांसां	<u>गंगंगं</u>
मंमंमं	<u>गंगंगं</u>	रेरेरे	सांसांसां
<u>नीनीनी</u>	धधध	<u>नीनीनी</u>	धधध
ममम	धधध	<u>गगग</u>	ममम
<u>गगग</u>	रेरेरे	सासासा	<u>न्नीन्नीन्नी</u>
धधध	ममम	धधध	<u>न्नीन्नीन्नी</u>
<u>गगग</u>	रेरेरे	<u>न्नीनीनी</u>	सासासा

नीऽऽ

नीऽऽ

साऽऽ

नीऽऽ

नीऽऽ

साऽऽ

नीऽऽ

नीऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) ग

ग) म

घ) नी

10.2 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

10.3 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

10.4 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

- 10.5 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) म
ख) नि
ग) नी
घ) ग
- 10.6 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) रे
ख) सा
ग) प
घ) म
- 10.7 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?
क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर
- 10.8 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) कोई भी नहीं
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) गंधार
- 10.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
क) नहीं
ख) हां
- 10.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

- क) सही
ख) गलत
- 10.11 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?
क) कल्याण
ख) काफी
ग) रागेश्री
घ) श्री
- 10.12 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
क) संपूर्ण संपूर्ण
ख) षाडव संपूर्ण
ग) संपूर्ण औडव
घ) औडव संपूर्ण
- 10.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
- 10.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
ख) बागेश्री में ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
ग) बागेश्री में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- 10.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।

- ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
- ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
- घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

10.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थोट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.75 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

- लय: वादन/आयन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 10.1 उत्तर: क)
- 10.2 उत्तर: ख)
- 10.3 उत्तर: ग)
- 10.4 उत्तर: घ)
- 10.5 उत्तर: क)
- 10.6 उत्तर: ख)
- 10.7 उत्तर: ग)
- 10.8 उत्तर: घ)
- 10.9 उत्तर: क)
- 10.10 उत्तर: ख)
- 10.11 उत्तर: ग)
- 10.12 उत्तर: घ)
- 10.13 उत्तर: क)
- 10.14 उत्तर: ख)
- 10.15 उत्तर: ग)

10.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-11

राग बागेश्री का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	बागेश्री राग (गायन के संदर्भ में)
11.3.1	बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना (गायन के संदर्भ में)
11.3.2	बागेश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
11.3.3	बागेश्री राग का बड़ा ख्याल
11.3.4	बागेश्री राग के बड़े ख्याल की तानें स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशासित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 बागेश्री राग का परिचय

11.3.1 बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म प ध ग, म ग रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध ग, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है

अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे- नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है।

बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नि ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नि ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है।

इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बागेश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध नी सा म या ध नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वहीं रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री - नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

11.3.2 आलाप

- सा ऽ ऽ सा, नी सा, सा, नी ध - सा रे सा,

- ध नी नी ध नी सा, सा नी ध म -,
म ध नी नी सा, सा,
- ध नी सा म ग - म ग रे सा
- सा नी ध नी ध -, म म ध,
म ध नी नी सा, सा
- ध नी सा म -, ग म ग रे सा, ग म
ग - ग म ध - म ग, म ग रे सा
- म ग ध, ध म - ध नी ध म,
म ध नी नी सां, सां
- सां - गं गं रें सां -, ध नी नी सां ,
मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध - म प ध ग -
म ग रे सा, ध नी नी
सा म ग रे सा, सा

11.3.3 बागेश्री बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

कासे कहूँ मन की बतियाँ, तरपत बीतत रतियाँ।

अन्तरा

सुजन पिया – परदेस गवन किनो, लिखी न पतियाँ।।

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								सां	<u>नि</u>	धप	<u>धनि</u>
								का	ऽ	ऽऽ	सेक
सां	ऽ	<u>नि</u>	ध	मपध	<u>ग</u>	रे	सा				
हूँ	ऽ	म	न	कीऽऽ	ब	ति	यां				
								ध	<u>नि</u>	सा	सा
								त	रे	प	त
म	ध	<u>नि</u>	ध	<u>ग</u>	रे	सा	ऽ				
बी	ऽ	त	त	र	ति	यां	ऽ				

अंतरा

								म	ध	<u>नि</u>	<u>निध</u>
								सु	ज	न	पिऽ
सां	ऽ	<u>नि</u>	सां	मं	<u>गं</u>	रें	सां				
या	ऽ	प	र	दे	ऽ	स	ग				

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								<u>नि</u>	ध	म	सां
								व	न	की	ऽ
<u>नि</u>	ध	मपध	<u>ग</u>	म	<u>ग</u>	रे	सा				
नो	लि	खीऽऽ	न	प	ति	यां	ऽ				

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								सां	<u>नि</u>	धप	<u>धनि</u>
								का	ऽ	ऽऽ	सेक
सां	ऽ	<u>नि</u>	ध	मपध	<u>ग</u>	रे	सा				
हूँ	ऽ	म	न	कीऽऽ	ब	ति	यां				
								ध	<u>नि</u>	सा	सा
								त	रे	प	त
म	ध	<u>नि</u>	ध	<u>ग</u>	रे	सा	ऽ				
बी	ऽ	त	त	र	ति	यां	ऽ				

11.3.4 बागेश्री की तानें

- सम से गत तक

सान्नीधनी

रेसान्नीध

मगरेसा

धमगम

नीधनीध

सांनीसांनी

रेसारेसां

नीधनीध

सासाधनी

धमगम

गरेसा-

- सम से सम तक

नीनीनी

सासासा

गगग

ममम

धधध

नीनीनी

सांसांसां

गंगंगं

मंमंमं

गंगंग

रेरेरे

सांसांसां

नीनीनी

धधध

नीनीनी

धधध

ममम

धधध

गगग

ममम

गगग

रेरेरे

सासासा

नीनीनी

धधध

ममम

धधध

नीनीनी

सासासा

नीनीनी

सासासा

नीनीनी

- सम से सम तक

साऽसा नीऽनी

गऽग मऽम

धऽधनीऽनी

सांऽसांगंऽगं

मंऽमगंऽगं

रेंऽरेंसांऽसां

नीऽनीधऽध

नीऽनीधऽध

मऽमधऽध

गऽगमऽम

गऽगरेऽरे

साऽसानीऽनी

धऽधमऽम

धऽधनीऽनी

साऽसानीऽनी

साऽसानीऽनी

- 12वीं मात्रा से सम तक

धनीसानी

सा---

ध॒नी॒सा॒नी

सा---

ध॒नी॒सा॒नी

- पाँचवीं मात्रा से गत तक

सा॒नी॒ध॒नी

रेसा॒नीसा

म॒गरेसा

धम॒गम

नी॒धसां॒नी

धम॒गम

ग॒रेसा-

- सम से सम तक

म॒गरेसा

ग॒रेसा॒नी

रेसा॒नीध

सा॒नी॒धनी

सासा॒नीसा

ग॒गसा॒ग

मम॒गम

धधमध

नी॒नी॒धनी

सांसां॒नीसां

गं॒गरेसां

नी॒धसां॒नी

धनी॒धम

ग॒मधनी

सां॒नी॒धम

धम॒गरे

- सम से सम तक

नी॒सा॒गग

सा॒गमम

गमधध

धनीसांसां

रेसांनीसां

मगरेसा

नीसाधनी

रेसान्नीसा

मगरेसा

मधनीनी

नीसांगंगं

धनीधम

मगरेसा

सा-मग

धनीसा-

नीसाधनी

- सम से सम तक

नीनीनीनी

गगगग

धधधध

सांसांसांसां

मंमंमंमं

रेरेरेरे

नीनीनीनी

नीनीनीनी

मममम

गगगग

सासासासा

मममम

नीनीनीनी

गंगंगंगं

गंगंगंगं

सांसांसांसां

धधधध

धधधध

धधधध

मममम

गगगग

रेरेरे

सासासासा

नीनीनीनी

धधधध

मममम

धधधध

नीनीनीनी

सासासासा

नीनीनीनी

सासासासा

नीनीनीनी

- सम से सम तक

सासासासानीनीनीनी

गगगगमममम

धधधधनीनीनीनी

सांसांसांसांगंगंगंग

मंमंमंगंगंगंग

रेरेरेसांसांसांसां

नीनीनीनीधधधध

नीनीनीनीधधधध

ममममधधधध

गगगगमममम

गगगगरेरेरे

सासासासानीनीनीनी

धधधधमममम

धधधधनीनीनीनी

साऽऽऽनीनीनीनी

साऽऽऽनीनीनीनी

- खाली से सम तक

धधधनीनीनी

सासासानीनीनी

सासासागगग

रेरेरेसासासा

नीनीनीसासासा

धधधनीनीनी

मंमंमंगंगं

नीनीनीधधध

मममधधध

गगगरेरेरे

धधधममम

गगगरेरेरे

नीऽऽनीऽऽ

नीऽऽसाऽऽ

• ऽनीनीनी

ऽगगग

ऽधधध

ऽसांसांसां

ऽनीनीनी

ऽनीनीनी

ऽममम

ऽगगग

गगगममम

सांसांसांगंगं

रेरेरेसांसांसां

नीनीनीधधध

गगगममम

सासासानीनीनी

धधधनीनीनी

नीनीनीसासासा

साऽऽनीऽऽ

नीऽऽनीऽऽ

ऽसासासा

ऽममम

ऽनीनीनी

ऽरेरेरे

ऽधधध

ऽधधध

ऽधधध

ऽममम

<u>ऽगगग</u>	ऽरेरे
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽधधध	ऽममम
ऽधधध	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>
ऽसासासा	<u>ऽनीनीनी</u>

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 11.1 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
 क) नहीं
 ख) हां
- 11.2 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।
 क) सही
 ख) गलत
- 11.3 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?
 क) कल्याण
 ख) काफी
 ग) रागेश्री
 घ) श्री
- 11.4 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
 क) संपूर्ण संपूर्ण
 ख) षाडव संपूर्ण
 ग) संपूर्ण औडव

- घ) औडव संपूर्ण
- 11.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?
क) रे
ख) ग
ग) म
घ) नी
- 11.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?
क) कल्याण
ख) काफी
ग) भैरवी
घ) तोड़ी
- 11.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?
क) ध नि ध प, म ग
ख) ध सां नि ध प, म ग
ग) नि ध म प ध ग
घ) ध नि सां नी ध म ग
- 11.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?
क) 9
ख) 16
ग) 2
घ) 1
- 11.9 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) म
ख) नि

- ग) नी
घ) ग
- 11.10 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) रे
ख) सा
ग) प
घ) म
- 11.11 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?
क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर
- 11.12 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) कोई भी नहीं
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) गंधार
- 11.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
- 11.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

- ख) बागेश्री में ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- ग) बागेश्री में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

11.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

- क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।
- ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
- ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
- घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

11.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग 5 है। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वहीं रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 11.1 उत्तर: क)
11.2 उत्तर: ख)
11.3 उत्तर: ग)
11.4 उत्तर: घ)
11.5 उत्तर: क)
11.6 उत्तर: ख)
11.7 उत्तर: ग)
11.8 उत्तर: घ)
11.9 उत्तर: क)
11.10 उत्तर: ख)
11.11 उत्तर: ग)

- 11.12 उत्तर: घ)
11.13 उत्तर: क)
11.14 उत्तर: ख)
11.15 उत्तर: ग)

11.7 संदर्भ

- श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।
शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।
भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरसा
झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.8 अनुशंसित पठन

- भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरसा
अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।
शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।
झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.9 पाठगत प्रश्न

- प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।
प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।
प्रश्न 3. राग बागेश्री के बड़े ख्याल को लिखिए।
प्रश्न 4. राग बागेश्री के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-12

राग बागेश्री - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	राग बागेश्री (गायन के संदर्भ में)
12.3.1	बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना (गायन के संदर्भ में)
12.3.2	बागेश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
12.3.3	बागेश्री राग का छोटा ख्याल
12.3.4	बागेश्री राग के छोटे ख्याल की तानें स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग बागेश्री (गायन के संदर्भ में)

12.3.1 बागेश्री राग का परिचय तथा तुलना

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म प ध ग, म ग रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध ग, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। पं

चम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बागेश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध नी सा म या ध नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वहीं रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री - नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

12.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध - सा रे सा,

• ध नी नी ध नी सा, सा नी ध म -,

म ध नी नी सा, सा,

• ध नी सा म ग - म ग रे सा

• सा नी ध नी ध -, म म ध,

म ध नी नी सा, सा

• ध नी सा म -, ग म ग रे सा, ग

म ग - ग म ध - म ग, म ग रे सा

• म ग ध, ध म - ध नी ध म,

म ध नी नी सां, सां

• सां - गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

मं गं रें सां सां,

• सां नी ध नी ध - म प ध

ग - म ग रे सा,

ध नी नी सा म ग रे सा, सा

12.3.3 बागेश्री छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

राग: बागेश्री

ताल: एकताल

लय: द्रुत लय

स्थाई

पीऊ-पीऊ बोले पपीहा वन में,
हूँक उठत है मोरे मन में,

अन्तरा

जब से गये परदेस बेददी,
जीना मारना मुश्किल करदी।
“सुजन” जले बिरहा के अगन में।

स्थायी				X				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि
								पी	ऊ	पी	ऊ	बो	ऽ	ले	प
ध	ऽ	ग	म	ग	रे	सा	ऽ								
पी	ऽ	ऽ	हा	व	न	में	ऽ								
								प	नि	सा	म	ग	रे	सा	ऽ
								हूँ	ऽ	क	उ	ठ	त	है	ऽ
म	ध	मध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ								
मो	ऽ	रेऽ	ऽऽ	मऽ	नऽ	मेंऽ	ऽऽ								

अंतरा

सां ऽ सां सां नि सां नि ध
दे ऽ स बी द र दी ऽ

सां सां सां सां नि सां नि ध
मु शि क ल क र दी ऽ

ग ऽ ग् ग् ग् रे सा ऽ
हा ऽ के अ ग न में ऽ

ग म ध नि सां ऽ सां सां
जा ब से ग ये ऽ प र

ध नि सां मं गं रें सां ऽ
जी ऽ ना ऽ म र न ऽ

ध ध ध प ध नि ध ध
सु ज न ज ले ऽ बि र

12.3.4 बागेश्री राग की तानें

- सम से सम तक

नीसा

गम

धनी

धम

गम

धम

गरे

सासा

नीसा	गम	ध-	नीसा
गम	ध-	नीसा	गम

- सम से सम तक

सांनी	धनी	धम	पध
ग-	मग	रेसा	नीसा
गम	गम	ध-	गम
गम	ध-	गम	गम

- सम से गत तक

सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--

- सम से सम तक

गम	धनी	सांनी	धनी
ध-	--	गम	धनी
सांनी	धनी	ध-	--
गम	धनी	सांनी	धनी

- पाँचवी मात्रा से गत तक

गम	धनी	सांनी	धनी
----	-----	-------	-----

सां-	सां-	सां-	--
गुम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
गुम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--

● सम से गुत तक

धनी	सा,ध	नीसा,	धनी,
गुम	ध,गु	मध,	गुम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,
धनी	सांनी	धम	गुम
धम	गुम	गरे	सासा
गुम	धनी	सां-	गुम
धनी	सां-	गुम	धनी

● सम से सम तक

धनी	सागु	नीसा	गुम
सागु	मध	गुम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं
रेंसां	नीसां	नीध	नीध

म <u>ग</u>	म <u>ग</u>	रेसा	<u>नी</u> सा
ग <u>-</u>	ग <u>म</u>	ध <u>-</u>	--
<u>नी</u> सा	ग <u>-</u>	ग <u>म</u>	ध <u>-</u>
--	<u>नी</u> सा	ग <u>-</u>	ग <u>म</u>
● <u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी	सासा	सासा
ग <u>ग</u>	ग <u>ग</u>	मम	मम
धध	धध	<u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी
सांसां	सांसां	ग <u>गं</u>	ग <u>गं</u>
मंमं	मंमं	ग <u>गं</u>	ग <u>गं</u>
रेरे	रेरे	सांसां	सांसां
<u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी	धध	धध
<u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी	धध	धध
मम	मम	धध	धध
ग <u>ग</u>	ग <u>ग</u>	मम	मम
ग <u>ग</u>	ग <u>ग</u>	रेरे	रेरे
सासा	सासा	<u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी
धध	धध	मम	मम
धध	धध	<u>नी</u> नी	<u>नी</u> नी

सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
● सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
<u>गग</u>	<u>गग</u>	मम	मम
धध	धध	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
सांसां	सांसां	<u>गंगं</u>	<u>गंगं</u>
मंमं	मंमं	<u>गंगं</u>	<u>गंगं</u>
रें	रें	सांसां	सांसां
<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>	धध	धध
<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>	धध	धध
मम	मम	धध	धध
<u>गग</u>	<u>गग</u>	मम	मम
<u>गग</u>	<u>गग</u>	रेरे	रेरे
सासा	सासा	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
धध	धध	मम	मम
धध	धध	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
साऽ	ऽऽ	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>
साऽ	ऽऽ	<u>नीनी</u>	<u>नीनी</u>

• साऒसा	<u>नीऒनी</u>
<u>गऒग</u>	मऒम
धऒध	<u>नीऒनी</u>
सांऒसां	<u>गंऒगं</u>
मंऒमं	<u>गंऒगं</u>
रेंऒरें	सांऒसां
<u>नीऒऒ</u>	<u>नीधऒ</u>
<u>ऒधनी</u>	<u>ऒऒनी</u>
धऒऒ	धमऒ
ऒमध	ऒऒध
<u>गऒऒ</u>	<u>गमऒ</u>
<u>ऒमग</u>	<u>ऒऒग</u>
रेऒऒ	रेसाऒ
<u>ऒसाननी</u>	<u>ऒऒनी</u>
धऒऒ	धमऒ
ऒमध	ऒऒध
<u>नीऒऒ</u>	<u>नीसाऒ</u>
<u>ऒऒनी</u>	<u>ऒऒनी</u>

साऽऽ

ऽनीऽ

ऽनीऽ

साऽऽ

- खाली से सम तक

धधध

नीनीनी

सासासा

नीनीनी

सासासा

गगग

रेरेरे

सासासा

नीनीनी

सासासा

गगग

ममम

धधध

नीनीनी

सांसांसां

गंगंगं

मंमंमं

गंगंगं

रेरेरे

सांसांसां

नीनीनी

धधध

नीनीनी

धधध

ममम

धधध

गगग

ममम

गगग

रेरेरे

सासासा

नीनीनी

धधध

ममम

धधध

नीनीनी

गगग

रेरेरे

नीनीनी

सासासा

नीऽऽ

नीऽऽ

साऽऽ

नीऽऽ

नीऽऽ

साऽऽ

नीऽऽ

नीऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

- ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।
घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।
- 12.2 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
- क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
ख) बागेश्री में ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
ग) बागेश्री में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
- 12.3 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
- क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।
ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।
- 12.4 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
- क) संपूर्ण संपूर्ण
ख) षाडव संपूर्ण
ग) संपूर्ण औडव
घ) औडव संपूर्ण
- 12.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?
- क) रे
ख) ग
ग) म
घ) नी
- 12.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?
- क) कल्याण

- ख) काफी
ग) भैरवी
घ) तोड़ी
- 12.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?
क) ध नि ध प, म ग
ख) ध सां नि ध प, म ग
ग) नि ध म प ध ग
घ) ध नि सां नी ध म ग
- 12.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?
क) 9
ख) 16
ग) 2
घ) 1
- 12.9 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) म
ख) नि
ग) नी
घ) ग
- 12.10 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) रे
ख) सा
ग) प
घ) म
- 12.11 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

- क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर
- 12.12 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) कोई भी नहीं
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) गंधार
- 12.13 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
क) नहीं
ख) हां
- 12.14 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।
क) सही
ख) गलत
- 12.15 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?
क) कल्याण
ख) काफी
ग) रागेश्री
घ) श्री

12.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री

राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 12.1 उत्तर: क)
12.2 उत्तर:ख)
12.3 उत्तर: ग)
12.4 उत्तर: घ)
12.5 उत्तर: क)
12.6 उत्तर: ख)
12.7 उत्तर: ग)
12.8 उत्तर: ख)
12.9 उत्तर: क)
12.10 उत्तर: ख)
12.11 उत्तर: ग)
12.12 उत्तर: घ)
12.13 उत्तर: क)
12.14 उत्तर: ख)
12.15 उत्तर: ग)

12.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरसा।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरसा।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-13

राग वृंदावनी सारंग (वादन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	राग वृंदावनी सारंग
13.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय तथा तुलना
13.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप
13.3.3	वृंदावनी सारंग राग की विलंबित गत
13.3.4	वृंदावनी सारंग राग की विलंबित गत के तोड़े
13.3.5	वृंदावनी सारंग राग की द्रुत गत
13.3.6	वृंदावनी सारंग राग की द्रुत गत के तोड़े स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4	सारांश
13.5	शब्दावली
13.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7	संदर्भ
13.8	अनुशंसित पठन
13.9	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

13.3 राग वृंदावनी सारंग (वादन के संदर्भ में)

13.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय तथा तुलना

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - नि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां नि प, म रे, सां

पकड़ - रे म प नि प, म रे, प म रे, नि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है। ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृन्दावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, नि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विशेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, रे, प म रे, रे म रे आदि। राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद(नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

वृन्दावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृन्दावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृन्दावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)। मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृन्दावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृन्दावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प नी सा रे, नी सा रे,))।

मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृन्दावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प्र^म।

वृन्दावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृन्दावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मलहार अंग का प्रयोग अधिक होता है।

13.3.2 आलाप

- सा, सा रे सा, सा, नी सा नी नी सा,
रे ऽ सा सा
- नी नी सा ऽ सा नी ऽ सा रे ऽ रे
म रे ऽ नी सा रे ऽ साऽ
- सा नी नी ऽ प्र ऽ प्र ऽ ऽ म प्र ऽ
प्र प्र नी प ऽ म प्र नी नी सा ऽ सा ऽ
- नी सा ^३ म म प ऽ ऽ प म रे ऽ
म रे ऽ रे म प ऽ ऽ म रे ऽ नी नी सा ऽ
- ^३ म म प ऽ ऽ प ऽ म प नी प ऽ प ऽ
म म प ऽ प नी प ऽ नी प नी प म रे ऽ
रे म रे ऽ नी नी सा ऽ
- ^३ म प नी नी ऽ सां ऽ सां ऽ नी सां रें ऽ
रें मं मं रें ऽ रें सां
- नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रें ऽ
मं रें नी नी सां ऽ सां
- सां नी प ऽ नी सां नी प ऽ म प ऽ
म रे ऽ प म रे ऽ नी नी सा ऽ साऽ

13.3.3 वृंदावनी सारंग

लय- विलंबित

ताल- तीनताल

X				2				0				3				
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
स्थाई												रेम	रे	सासा	नीसा	रेसा
												दिर	दा	दिर	दिर	दिर
रे	रे	सा	नीसा	रे	पम	प	म	रेम	रे	सा						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा						
अन्तरा												पप	म	मम	प	नीप
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
नी	नी	सां	सांसां	नी	सांसां	रें	सां	प	नी	प						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा						
												सांसां	नी	सांसां	रें	मं
												दिर	दा	दिर	दा	दिर
रें	नी	सां	नीनी	म	पप	रे	म	रे	नी	सा						
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा						

13.3.4 वृंदावनी सारंग के तोड़े

- सम से गत तक

प॒न्नीसासा	नीसारे॑रे
सा॑रेमम	रेमप॑प
मप॒नीनी	पनीसांसां
नीसा॑रि॑रे	रेम॑रि॑सां
नीसा॑रि॑सां	नीप॑मप
मरेसासा	

- सातवीं मात्रा से सम तक

सां॒नीपम	रेमरेसा
रे - - -	- - - -
सां॒नीपम	रेमरेसा
रे - - -	- - - -
सां॒नीपम	रेमरेसा

- सम से सम तक

प॒न्नीसा॑रे	नीसा॑रेम
सा॑रेमप	रेमप॒नी
मपनीसां	पनीसा॑रि॑

नीसारेमं	रेसांनीसां
<u>नीनीपनी</u>	<u>नीपमप</u>
रेमपम	रेमरेसा
नीसारेसा	रे - नीसा
रेसारे-	नीसारेसा

● गत से गत तक

रेमरेम	पमरेसा
मपमप	<u>नीनीपम</u>
नीसांनीसां	रेमरेसां
<u>नीपमप</u>	मपनीसां
पनीसारे	सांनीपप
<u>नीपमप</u>	पमरेरे
मरेसासा	नीसारेसा
<u>नीपनीसा</u>	रेमरेम

● सम से सम तक

नीसारेनी	सारेनीसा
नीसाननीप	मपनीसा
रेसाननीसा	नीसारेम

रेमपम	मपनीप
पनीसांसा	नीसारेंमं
रेंसांनीसां	नीसांनीप
मपरेम	पमरेम
रेसान्नीसा	रे-रे-

● सम से सम तक

प्रप्र,नी	नीनी,सासा,
नीनीनी,सा	सासा,रेरे,
सासासा,रे	रेरे,मम,
ममम,प	पप, <u>नीनी</u> ,
पपप,नी	नीनी,सांसां
नीनीनी,सां	सांसां,रें
सांसांसां,रें	रें,मंमं,
रेंरेंसां	सांसां <u>नीनी</u>
<u>नीपपप</u>	मममरे
रेरेसासा	सान्नीनी <u>नी</u>
प्रप्र,म	मम--
प्रनीसारे	सा-रेरे

रे---	----
पनीसारे	सा-रेरे
रे---	----
पनीसारे	सा-रेरे
● सांसां <u>नीनी</u>	पपमम
<u>नीनी</u> पप	ममरेरे
पपमम	रेरेसासा
ममरेरे	सासानीनी
रेरेसासा	नीनीसासा
ममरेरे	पपमम
<u>नीनी</u> पप	पमरेसा
रेमरेसा	ममरेसा
रेऽऽऽ	रेमरेसा
ममरेसा	रेऽऽऽ
रेमरेसा	ममरेसा

13.3.5 वृंदावनी सारंग

लय- द्रुत

ताल- तीनताल

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई								सां	सांसां	नी	सां	नी	नीनी	म	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	-	म	म	प	-	प	-								
दा	-	दा	रा	दा	-	रा	-								
								म	प	सां	-	नी	पप	म	प
								दा	रा	दा	-	दा	दिर	दा	रा
रे	मम	प	म	रे	रेरे	नी	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
अन्तरा															
								म	मम	प	प	नी	नीनी	सां	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	-	सां	सां	रें	रें	नी	सां								
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								रें	मंमं	रें	सां	नी	नीनी	म	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	मम	पनी	पम	रे	मम	रे	सा								
दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा								

13.3.6 वृंदावनी सारंग के तोड़े द्रुत

- खाली से सम तक

रेसा	नीसा	रेम	पनी
सारें	सां <u>नी</u>	पम	रेसा

- खाली से सम तक

रेम	पनी	सां <u>नी</u>	पम
रेम	रेसा	नीसा	रेसा

- सम से सम तक

पप	मप	मप	मरे
रेम	पम	रेम	रेसा
नीसा	रेसा	रे-	नीसा
रेसा	रे-	नीसा	रेसा

- सम से खाली तक

रेम	पनी	सां-	रेम
पनी	सां-	रेम	पनी

- सम से सम तक

रेम	पनी	सां-	सां-
सां-	--	रेम	पनी

सां-	सां-	सां-	--
रेम	पनी	सां-	सां-

● सम से खाली तक

<u>नीनी</u>	<u>पनी</u>	<u>नीप</u>	मप
रेम	रेसा	नीसा	रेसा
नीसा	रेम	<u>पनी</u>	पम
मप	नीसां	रेंमं	रेंसां
मंमं	रेंसां	नीसां	<u>नीप</u>
मप	मरे	सासा	नीसा

● सम से सम तक

मम	रेसा	नीसा	रेसा
<u>नीप</u>	मप	नीनी	सा-
<u>नीप</u>	नीसां	नीसां	रेसां
<u>नीप</u>	मप	मप	<u>नीप</u>
मप	मरे	रेम	पम
रेम	रेसा	<u>नीप</u>	नीसा
नीसा	रेनी	सारे	नीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 13.1 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?
- क) नी
ख) प
ग) म
घ) नी
- 13.2 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?
- क) कल्याण
ख) काफी
ग) भैरवी
घ) तोड़ी
- 13.3 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?
- क) नि प, म रे
ख) ध सां नि प, म
ग) नि म प म रे
घ) नि सां नी प म रे
- 13.4 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?
- क) 9
ख) 16
ग) 2
घ) 1
- 13.5 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
- क) रे
ख) नि

- ग) नी
घ) प
- 13.6 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) रे
ख) प
ग) सा
घ) म
- 13.7 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?
क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर
- 13.8 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) निषाद
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) कोई भी नहीं
- 13.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
क) नहीं
ख) हां
- 13.10 वृंदावनी सारंग राग, काफी तथा सारंग रागों के मिश्रण से बना है।
क) सही
ख) गलत
- 13.11 वृंदावनी सारंग राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

- क) कल्याण
 ख) काफी
 ग) मेघ
 घ) श्री
- 13.12 वृंदावनी सारंग राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
 क) संपूर्ण संपूर्ण
 ख) षाड़व षाड़व
 ग) संपूर्ण औडव
 घ) औडव औडव
- 13.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) मेघ में शुद्ध म तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध म का प्रयोग होता है।
 ख) मेघ में शुद्ध म तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध ग का प्रयोग होता है।
 ग) मेघ में शुद्ध नी तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध नी का प्रयोग होता है।
 घ) मेघ में शुद्ध ध तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध म का प्रयोग होता है।
- 13.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) वृंदावनी सारंग में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
 ख) वृंदावनी सारंग में रे म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
 ग) वृंदावनी सारंग में रे म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
 घ) वृंदावनी सारंग में म प नी प की संगति प्रमुखता से लगती है।
- 13.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) वृंदावनी सारंग राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।
 ख) वृंदावनी सारंग राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
 ग) वृंदावनी सारंग राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
 घ) वृंदावनी सारंग राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

13.4 सारांश

वृन्दावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। वृन्दावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, नि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विशेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, रे, प म रे, रे म रे आदि। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में तथा द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। इनमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

13.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- लय: वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 13.1 उत्तर: क)
13.2 उत्तर: ख)
13.3 उत्तर: ग)
13.4 उत्तर: घ)
13.5 उत्तर: क)
13.6 उत्तर: ख)
13.7 उत्तर: ग)
13.8 उत्तर: घ)
13.9 उत्तर: क)
13.10 उत्तर: ख)
13.11 उत्तर: ग)
13.12 उत्तर: घ)
13.13 उत्तर: क)
13.14 उत्तर: ख)
13.15 उत्तर: ग)

13.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

13.8 अनुशंसित पठन

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

13.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में विलम्बित गत के तोड़ों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग वृंदावनी सारंग में द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 6. राग वृंदावनी सारंग में द्रुत गत के तोड़ों को लिखिए।

प्रश्न 7. राग वृंदावनी सारंग में आलाप को बजाइए।

प्रश्न 8. राग वृंदावनी सारंग में विलम्बित गत को बजाइए।

प्रश्न 9. राग वृंदावनी सारंग में विलम्बित गत के तोड़ों को बजाइए।

प्रश्न 10. राग वृंदावनी सारंग में द्रुत गत को बजाइए।

प्रश्न 11. राग वृंदावनी सारंग में द्रुत गत के तोड़ों को बजाइए।

इकाई-14

राग वृंदावनी सारंग (गायन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	राग वृंदावनी सारंग
14.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय तथा तुलना (गायन)
14.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप (गायन)
14.3.3	वृंदावनी सारंग राग का छोटा ख्याल
14.3.4	वृंदावनी सारंग राग के छोटा ख्याल की तानें स्वयं जांच अभ्यास 1
14.4	सारांश
14.5	शब्दावली
14.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
14.7	संदर्भ
14.8	अनुशंसित पठन
14.9	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्म संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- प्रस्तुत राग का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रस्तुत राग की तुलना अन्य रागों से करने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

14.3 राग वृंदावनी सारंग (गायन के संदर्भ में)

14.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय तथा तुलना

राग - वृंदावनी सारंग

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - नि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां नि प, म रे, सां

पकड़ - रे म प नि प, म रे, प म रे, नि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है।

ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृन्दावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, नि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विशेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, रे, प म रे, रे म रे आदि।

राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद(नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

वृन्दावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृन्दावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृन्दावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)।

मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृन्दावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृन्दावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प्र ङ्गी सा रे, ङ्गी सा रे,)। मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में

अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प्र^१प्र।

वृंदावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृंदावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मलहार अंग का प्रयोग अधिक होता है।

14.3.2 आलाप

- सा, सा रे सा, सा, नी सा नी नी सा,
रे ऽ सा सा
- नी नी सा ऽ सा नी ऽ सा रे ऽ रे
म रे ऽ नी सा रे ऽ साऽ
- सा नी नी ऽ प्र ऽ प्र ऽ ऽ
म प्र ऽ
प्र प्र नी प ऽ म प्र नी
नी सा ऽ सा ऽ
- नी सा रे म म प ऽ ऽ
प म रे ऽ
म रे ऽ रे म प ऽ ऽ
म रे ऽ नी नी सा ऽ

- रे म म प ऽ ऽ प ऽ
म प नी प ऽ प ऽ
म म प ऽ प नी प ऽ
नी प नी प म रे ऽ
रे म रे ऽ नी नी सा ऽ
- रे म प नी नी ऽ सां ऽ सां
ऽ नी सां रें ऽ
रें मं मं रें ऽ रें सां
- नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रें ऽ
मं रें नी नी सां ऽ सां
- सां नी प ऽ नी सां नी
प ऽ म प ऽ
म रे ऽ प म रे ऽ
नी नी सा ऽ साऽ

14.3.3 वृंदावनी सारंग छोटा ख्याल ताल- तीनताल

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सां	सां	नी	सां	नी	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न
रे	-	म	-	प	-	-	-								
जा	ऽ	ऽ	ऽ	डूं	ऽ	ऽ	ऽ								
								म	प	सां	-	नी	प	म	रे
								कि	त	हुं	ऽ	छि	प	ग	ए
रे	म	नी	पम	रे	-	नी	सा								
कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	री	ऽ								
								सां	सां	नी	सां	नी	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न
रे	-	म	-	प	-	-	-								
जा	ऽ	ऽ	ऽ	डूं	ऽ	ऽ	ऽ								
								म	प	सां	-	नी	प	म	रे
								कि	त	हुं	ऽ	छि	प	ग	ए
रे	म	नी	पम	रे	-	नी	सा								
कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	री	ऽ								
								-	-	-	-	-	-	-	-
								ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
म		प	प	<u>नी</u>	प	नी	नी								
शी	ऽ	श	मु	कु	ट	औ	र								
								सां	-	सां	सां	रें	-	नी	सां
								का	ऽ	न	न	कुं	ऽ	ड	ल
नी	सां	रें	ऽ	मं	मं	रें	सां								
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न								
								नी	सां	रें	सां	<u>नी</u>	सां	नी	प
								रं	ऽ	ग	फि	र	त	गि	र
मप	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीसां	रेंसां	<u>नी</u>	प								
धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ								
								सां	सां	नी	सां	<u>नी</u>	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न

14.3.4 वृंदावनी सारंग के तोड़े

● प्र॒त्नी	सासा	त्नीसा	रेरे
सारे	मम	रेम	पप
मप	<u>नीनी</u>	पनी	सांसां
नीसां	रें	रेंमं	रेंसां
नीसां	रेंसां	<u>नीप</u>	मप
मरे	सासा		
● सां <u>नी</u>	पम	रेम	रेसा
रे -	--	--	--
सां <u>नी</u>	पम	रेम	रेसा
रे -	--	--	--
सां <u>नी</u>	पम	रेम	रेसा
● प्र॒त्नी	सारे	त्नीसा	रेम
सारे	मप	रेम	<u>पनी</u>
मप	नीसां	पनी	रें
नीसां	रेंमं	रेंसां	नीसां
<u>नीनी</u>	<u>पनी</u>	<u>नीप</u>	मप
रेम	पम	रेम	रेसा

नीसा	रेसा	रे -	नीसा
रेसा	रे-	नीसा	रेसा
● रेम	रेम	पमरेसा	
मप	मप	<u>नीनी</u>	पम
नीसां	नीसां	रेंमं	रेंसां
<u>नीप</u>	मप	मप	नीसां
पनी	सांरें	सां <u>नी</u>	पप
<u>नीप</u>	मप	पम	रेरे
मरे	सासा	नीसा	रेसा
<u>नीप</u>	नीसा	रेम	रेम
● नीसा	रेनी	सारे	नीसा
नीसा	नीप	मप्र	नीसा
रेसा	नीसा	नीसा	रेम
रेम	पम	मप	नीप
पनी	सांसा	नीसां	रेंमं
रेंसां	नीसां	नीसां	नीप
मप	रेम	पम	रेम
रेसा	नीसा	रे-	रे-

● प्रप	प्र,नी	नीनी,	सासा,
नीनी	नी,सा	सासा,	रेरे,
सासा	सा,रे	रेरे,	मम,
मम	म,प	पप,	<u>नीनी</u> ,
पप	प,नी	नीनी,	सांसां
नीनी	नी,सां	सांसां,	रें
सांसां	सां,रें	रें,	मंमं,
रें	रेंसां	सांसां	<u>नीनी</u>
<u>नीप</u>	पप	मम	मरे
रेरे	सासा	<u>सान्नी</u>	<u>नीनी</u>
प्रप	प्र,म	मम	--
प्रनी	सारे	सा-	रेरे
रे-	--	--	--
प्रनी	सारे	सा-	रेरे
रे-	--	--	--
प्रनी	सारे	सा-	रेरे
● सांसां	<u>नीनी</u>	पप	मम
<u>नीनी</u>	पप	मम	रेरे

पप	मम	रेरे	सासा
मम	रेरे	सासा	नीनी
रेरे	सासा	नीनी	सासा
मम	रेरे	पप	मम
<u>नीनी</u>	पप	पम	रेसा
रेम	रेसा	मम	रेसा
रेऽ	ऽऽ	रेम	रेसा
मम	रेसा	रेऽ	ऽऽ
रेम	रेसा	मम	रेसा
● रेसा	नीसा	रेम	पनी
सांरिं	सां <u>नी</u>	पम	रेसा
● रेम	पनी	सां <u>नी</u>	पम
रेम	रेसा	नीसा	रेसा
● पप	मप	मप	मरे
रेम	पम	रेम	रेसा
नीसा	रेसा	रे-	नीसा
रेसा	रे-	नीसा	रेसा
● रेम	पनी	सां-	रेम

पनी	सां-	रेम	पनी
● रेम	पनी	सां-	सां-
सां-	--	रेम	पनी
सां-	सां-	सां-	--
रेम	पनी	सां-	सां-
● <u>नीनी</u>	<u>पनी</u>	<u>नीप</u>	मप
रेम	रेसा	नीसा	रेसा
नीसा	रेम	<u>पनी</u>	पम
मप	नीसां	रेंमं	रेंसां
मंमं	रेंसां	नीसां	<u>नीप</u>
मप	मरे	सासा	नीसा
● मम	रेसा	नीसा	रेसा
<u>नीप</u>	मप	नीनी	सा-
<u>नीप</u>	नीसां	नीसां	रेसां
<u>नीप</u>	मप	मप	<u>नीप</u>
मप	मरे	रेम	पम
रेम	रेसा	<u>नीप</u>	नीसा
नीसा	रेनी	सारे	नीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 14.1 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?
- क) नी
ख) प
ग) म
घ) नी
- 14.2 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?
- क) कल्याण
ख) काफी
ग) भैरवी
घ) तोड़ी
- 14.3 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?
- क) नि प, म रे
ख) ध सां नि प, म
ग) नि म प म रे
घ) नि सां नी प म रे
- 14.4 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?
- क) 9
ख) 16
ग) 2
घ) 1
- 14.5 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
- क) रे
ख) नि

- ग) नी
घ) प
- 14.6 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?
क) रे
ख) प
ग) सा
घ) म
- 14.7 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?
क) दिन का प्रथम प्रहर
ख) दिन का तीसरा प्रहर
ग) रात्रि का तीसरा प्रहर
घ) दोपहर
- 14.8 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?
क) निषाद
ख) षड्ज
ग) मध्यम
घ) कोई भी नहीं
- 14.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।
क) नहीं
ख) हां
- 14.10 वृंदावनी सारंग राग, काफी तथा सारंग रागों के मिश्रण से बना है।
क) सही
ख) गलत
- 14.11 वृंदावनी सारंग राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

- क) कल्याण
 ख) काफी
 ग) मेघ
 घ) श्री
- 14.12 वृंदावनी सारंग राग की जाति निम्न में से कौन सी है?
 क) संपूर्ण संपूर्ण
 ख) षाड़व षाड़व
 ग) संपूर्ण औडव
 घ) औडव औडव
- 14.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) मेघ में शुद्ध म तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध म का प्रयोग होता है।
 ख) मेघ में शुद्ध म तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध ग का प्रयोग होता है।
 ग) मेघ में शुद्ध नी तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध नी का प्रयोग होता है।
 घ) मेघ में शुद्ध ध तथा वृंदावनी सारंग में शुद्ध म का प्रयोग होता है।
- 14.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) वृंदावनी सारंग में म रे ग की संगति प्रमुखता से लगती है।
 ख) वृंदावनी सारंग में रे म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
 ग) वृंदावनी सारंग में रे म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।
 घ) वृंदावनी सारंग में म प नी प की संगति प्रमुखता से लगती है।
- 14.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?
 क) वृंदावनी सारंग राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।
 ख) वृंदावनी सारंग राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।
 ग) वृंदावनी सारंग राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।
 घ) वृंदावनी सारंग राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

14.4 सारांश

वृन्दावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। वृन्दावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, नि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विशेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, रे, प म रे, रे म रे आदि। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में तथा द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। इनमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

14.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- लय: वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति में चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 14.1 उत्तर: क)
14.2 उत्तर: ख)
14.3 उत्तर: ग)
14.4 उत्तर: घ)
14.5 उत्तर: क)
14.6 उत्तर: ख)
14.7 उत्तर: ग)
14.8 उत्तर: घ)
14.9 उत्तर: क)
14.10 उत्तर: ख)
14.11 उत्तर: ग)
14.12 उत्तर: घ)
14.13 उत्तर: क)
14.14 उत्तर: ख)
14.15 उत्तर: ग)

14.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

14.8 अनुशंसित पठन

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग में आलाप को गाइए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में छोटे ख्याल को को गाइए।

प्रश्न 5. राग वृंदावनी सारंग में छोटे ख्याल के तानों को गाइए।

इकाई-15

लोक गीत/ धुन 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'
15.3.1	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' का परिचय
15.3.2	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' के बोल
15.3.3	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' की स्वरलिपि
15.3.4	लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा'
15.3.5	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' का परिचय
15.3.6	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' के बोल
15.3.7	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि
15.3.8	लोक 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि स्वयं जांच अभ्यास 1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्वारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्वारा इस लोक संगीत को पुनरावृत्ति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओं को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' व 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत/लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।

- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी लोक गीत/लोक धुन के वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

15.3 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत/धुन

15.3.1 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में शिवजी द्वारा अनेक तत्वों, कमल का फूल, वासुकि नाग, ब्रजशिला, एवं पृथ्वी को उत्पन्न कर सृष्टि की आरम्भिक रचना का वर्णन किया गया है। बैल के सींग पर पृथ्वी की रचना कर नौ-गज लम्बे मनुष्य बनाए, फिर अति छोटे मनुष्य उत्पन्न किए। अंत में साढ़े-तीन हाथ लम्बे मनुष्य उत्पन्न किए। 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' में राग देस का आभास प्रतीत होता है। राग देस खमाज थाट जन्य राग है। इसकी वादी, संवादी रे और प है तथा गायन समय रात्री का दूसरा प्रहर है। इसकी जाति औढ़व-सम्पूर्ण है। इस लोक गीत को कहरवा ताल में गाया तथा बजाया जाता है।

15.3.2 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' के बोल

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

तैई नौई-नौई रचना कै लाई,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी सर्व तलोटी पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी कौला फुलणु पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी वासकी नाग पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

तैई जबर-सलोटी पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

धौला बैल जे पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

बला सिंगा पर धरती पाया,

शिवा महादेवा-महादेवा।

धन-धन खेला तेरी,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

अबै गिठ-मिठलू जे पाएं,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

अवै गिठ-मिठलू जे पाए,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

15.3.3 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा				लय: द्रुत			
X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				सा	रेम	म	रे
				शि	बाऽ	मे	रे
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
मऽ	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	ऽ	ऽ
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
म	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	तै	ई
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
कि	याऽ	कि	या	र	च	ना	ऽ
नि	-	-	-				
ला	ऽ	या	ऽ				
				सा	रेम	म	रे
				शि	बाऽ	मे	रे
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
मऽ	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	ऽ	ऽ
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
म	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	तै	ई
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
कि	याऽ	कि	या	र	च	ना	ऽ
नि	-	-	-	सा	रेम	म	रे
ला	ऽ	या	ऽ	सि	बाऽ	मे	रे

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगे।

15.3.4 लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा'

ताल: कहरवा				लय: द्रुत	वाद्य: सितार			
X				0				
1	2	3	4	5	6	7	8	
				सा	रेम	म	रे	
				दा	दिर	दा	रा	
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-	
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	
X				0				
1	2	3	4	5	6	7	8	
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा	
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-	
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ	
नि	-	-	-					
दा	ऽ	ऽ	ऽ					
				सा	रेम	म	रे	
				दा	दिर	दा	रा	
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-	
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा	
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-	
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ	
नि	-	-	-					
दा	ऽ	ऽ	ऽ					

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगे।

15.3.5 लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इसमें शिव-स्तुति के लिए सोने-चाँदी का दीपक प्रज्वलित करने का वर्णन है। किन्तु सोने चाँदी के दीपक के न जलने पर मिट्टी के दीपक बनाकर, उनमें सरसों का तेल डालकर तथा रूई प्रयुक्त दीपक प्रज्वलित करने के भाव दर्शाए गए हैं। यह भजन चौदह मात्रा के दीपचन्दी ताल में बद्ध है। यह भजन बृन्दावनी सारंग राग की ओर संकेत करता है। यह राग काफी थाट जन्य है। इस राग का वादी स्वर रे और संवादी स्वर प है व गायन समय दोपहर है।

15.3.6 लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' के बोल

काहे रा बो तेरा दीया लखीया।

काहे री ता दीये जोत हाँ।

वो सुन्नै-चाँदी रा तेरा दीया बो लखीया,

रूपै री पाया दीये जोत हाँ।

ना बो हलदा बो तेरा दीया बो लखीया,

ना जलदी दीये जोत हाँ।

ओ चिकका-मिट्टी रा तेरा दीया-लखीया,

सरयाँ दा तेल पुआया हाँ।

बो सरूआँ दा तेल सामिया बो,

रूआँ री जोत पुआई हाँ।

ओ लटकी जलू ता मेरा दीया बो लखीया,

लटकी जली दीये जोत हाँ।

ओ अज जलयाँ किच्छ कल जलयाँ बो,

जलै परसूकणी राती हाँ।

15.3.7 लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी

लय: मध्य

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रा	बोऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	नि	-	-	-
दी	याऽ	ऽ	बो	ऽ	ल	ऽ	खि	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
नि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रा	बोऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	नि	-	-	-
दी	याऽ	ऽ	बो	ऽ	ल	ऽ	खि	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

15.3.8 लोक धुन 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि

			ताल: दीपचन्दी				लय: मध्य			वाद्य: सितार			
X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	नि	-	-	-
दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
नि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	-	सा	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	दिर	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	नि	-	-	-
दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	-	सा	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	दिर	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	नि	नि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 15.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?
- क) 14
- ख) 12
- ग) 6
- घ) 10
- 15.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?
- क) गायन, नृत्य

- ख) गायन, वादन, नृत्य
ग) वादन, नृत्य
घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत
- 15.3 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?
क) हरियाणा
ख) पंजाब
ग) हिमाचल प्रदेश
घ) जम्मू कश्मीर
- 15.4 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?
क) राम
ख) कृष्ण
ग) सीता
घ) शिव
- 15.5 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?
क) शिव
ख) कृष्ण
ग) सीता
घ) राम
- 15.6 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।
क) यमन
ख) देस
ग) बहार
घ) काफी

15.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत हैं जो कहरवा तथा दीपचंदी ताल, 08 तथा 14 मात्रा, में गाये जाते हैं। इसमें शिव-स्तुति के लिए सोने-चाँदी का दीपक प्रज्वलित करने का वर्णन है। शिवजी द्वारा अनेक तत्वों, वासुकि नाग, ब्रजशिला, एवं पृथ्वी को उत्पन्न कर सृष्टि की आरम्भिक रचना का वर्णन है। इनकी लय मध्य है। हिमाचल प्रदेश के चंबा के इस लोकगीत को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

15.5 शब्दावली

- नौई - नई
- फुलणु - फूल
- जिनी - जिसने
- गिठ-मिठलू - छोटे
- लय: वादन/आयन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति में चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

- 15.1 उत्तर: क)
- 15.2 उत्तर: ख)
- 15.3 उत्तर: ग)
- 15.4 उत्तर: घ)
- 15.5 उत्तर: क)
- 15.6 उत्तर: ख)

15.7 संदर्भ

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

सुनील राणा, गुआड़, गरोला, भरमौर, जिला चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

निर्मला देवी, लंघेई, साहो, चम्बा से से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

अध्याय-16

ताल

अध्याय की रूपरेखा

- 16.1 भूमिका
- 16.2 उद्देश्य तथा परिणाम
- 16.3 ताल
 - 16.3.1 झप ताल
 - 16.3.2 कहरवा ताल
 - 16.3.3 आड़ाचारताल
 - 16.3.4 धमार
- 16.4 सारांश
- 16.5 शब्दावली
- 16.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 16.7 संदर्भ
- 16.8 अनुशंसित पठन
- 16.9 पाठगत प्रश्न

16.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि के साथ भी बजाया जाता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेंगे।

16.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल का परिचय प्रदान करना।
- झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

16.3 ताल

16.3.1 झप ताल

मात्राएं	10
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

झपताल 10 मात्राओं की ताल है। इसमें 4 विभाग हैं। पहले व तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएं तथा दूसरे व चौथे विभाग में 3-3 मात्राएं हैं। पहली मात्रा पर सम, छटी मात्रा पर खाली, पहली, तीसरी तथा आठवीं मात्राओं पर ताली है। झपताल मुख्य रूप से तबले पर बजाई जाती है।

ताललिपि

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
एकगुण									
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
दुगुण									
x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना

x		2		
1	2	3	4	5
तिगुण				
धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना
0		3		
6	7	8	9	10
तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना
x		2		
1	2	3	4	5
चारगुण				
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
0		3		
6	7	8	9	10
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

16.3.2 कहरवा ताल

मात्राएं	08
विभाग	02
ताली	01
खाली	01

कहरवा ताल आधुनिक समय की एक बहुत लोकप्रिय ताल है। इसका प्रयोग फिल्मी गीत, भजन, ग़ज़ल, लोक संगीत आदि में अधिक होता है। यह प्रमुख रूप से तबले, ढोलक, नाल आदि पर बजाई जाती है। यह चंचल प्रकृति की ताल मानी गई है। इस ताल में 8 मात्राएं हैं तथा 2 विभाग हैं। प्रत्येक विभाग 4-4 मात्राओं का है। पहली मात्रा पर सम तथा पांचवी मात्रा पर खाली है।

ताललिपि

X					0			
1	2	3	4		5	6	7	8
एकगुण								
धा	गे	ना	ती		न	क	धिं	न
X					0			
1	2	3	4		5	6	7	8
दुगुण								
धागे	नाती	नक	धिंन		धागे	नाती	नक	धिंन
X					0			
1	2	3	4		5	6	7	8
तिगुण								
धागेना	तीनक	धिंनधा	गेनाती		नकधिं	नधागे	नातीन	कधिंन

X					0			
1	2	3	4		5	6	7	8
चारगुण								
धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन		धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन

16.3.3 आड़ाचारताल

मात्राएं	14
विभाग	07
ताली	04
खाली	03

आड़ाचारताल चौदह मात्रा की ताल है। इसमें सात विभाग हैं। हर विभाग दो-दो मात्राओं का है। इस ताल में चार ताली तथा तीन खाली होती हैं। ताल की पहली मात्रा पर सम तथा पहली, तीसरी, सातवीं तथा ग्यारहवीं मात्रा पर ताली व पाँचवी, नवीं तथा तेहरवीं मात्रा पर खाली होती है। अधिकतर बड़े ख्याल के साथ इसे बजाया जाता है। यह एक गम्भीर प्रकृति की ताल है।

ताललिपि

एकगुण							
1	2	3	4	5	6	7	8
धीं	तिरकट	धी	ना	तू	ना	क	ता
x		2		0		3	
9	10	11	12	13	14		
तिरकट	धी	ना	धी	धी	ना		
0		4		0			

दुगुण							
1	2	3	4	5	6	7	8
धीं तिरकट	धीना	तूना	कता	तिरकट धी	नाधी	धीना	धीं तिरकट
x		2		0	3		
9	10	11	12	13	14		
धीना	तूना	कता	तिरकट धी	नाधी	धीना		
0		4		0			

तिगुण							
1	2	3	4	5	6	7	8
धींतिरकटधी	नातूना	कतातिरकट	धीनाधी	धीनार्धी	तिरकटधीना	तूनाक	तातिरकटधी
x		2		0	3		
9	10	11	12	13	14		
नाधीधी	नार्धीतिरकट	धीनातू	नाकता	तिरकटधीना	धीधीना		
0		4		0			

चौगुण							
1	2	3	4	5	6	7	8
धींतिरकटधीना	तूनाकता	तिरकटधीनाधी	धीनार्धीतिरकट	धीनातूना	कतातिरकटधी	नाधीधीना	धींतिरकटधीना
x		2		0		3	
9	10	11	12	13	14		
तूनाकता	तिरकटधीनाधी	धीनार्धीतिरकट	धीनातूना	कतातिरकटधी	नाधीधीना		
0		4		0			

16.3.4 धमार ताल

मात्राएं	14
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

धमार ताल 14 मात्रा की ताल है। इसके चार विभाग हैं। पहले विभाग में 5 मात्राएँ, दूसरे विभाग में 2 मात्राएँ, तीसरे विभाग में 3 तथा चौथे विभाग में 4 मात्राएँ हाती हैं। पहली मात्रा पर सम, छठी तथा ग्यारहवीं मात्रा पर ताली व आठवीं मात्रा पर खाली होती है। धमार ताल का प्रयोग 'धमार' गायन शैली के साथ होता है। यह ताल पखावज या मृदंग पर बजाई जाती है। यह गम्भीर प्रकृति की ताल है। इस ताल की रचना पखावज के खुले बोलों के आधार पर हुई है।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
x					2		0			3			

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ	कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ
x					2		0			3			

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक	धिटधि	टधाऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
गतिट	तितता	ऽकधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक
0			3			

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिटधि	टधाऽग	तिततिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तितताऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
कधिटधि	टधाऽग	तिततिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तितताऽ
0			3			

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1. झप ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

(क) 10

(ख) 1

(ग) 14

- (घ) 16
- 16.2. कहरवा ताल में पांचवीं मात्रा पर कौन सा बोल आता है?
- (क) धा
(ख) न
(ग) क
(घ) धी
- 16.3. धमार ताल में पांचवीं मात्रा पर कौन सा बोल आता है?
- (क) धा
(ख) ट
(ग) क
(घ) धा
- 16.4. आडाचार ताल में छठी मात्रा पर कौन सा बोल आता है?
- (क) धा
(ख) ना
(ग) दिं
(घ) धी
- 16.5. निम्न में से कौन सी ताल पखावज पर बजती है?
- (क) एक ताल
(ख) धमार
(ग) दादरा
(घ) कहरवा

16.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में झप ताल, कहरवा ताल, आड़ाचारताल, धमार ताल आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। झप ताल 10 मात्रा, कहरवा ताल 8 मात्रा, आड़ाचारताल 14 मात्रा, धमार ताल 14 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। धमार ताल पखावज की ताल है। इस तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि के साथ भी बजाया जाता है।

16.5 शब्दावली

एकगुण- ठाह लय में बोलों को बजाना।

दुगुण- दुगनी लय में बोलों को बजाना।

तिगुण- तिगुनी लय में बोलों को बजाना।

चौगुण- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

16.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 उत्तर: क)

16.2 उत्तर: ख)

16.3 उत्तर: ख)

16.4 उत्तर: ख)

16.5 उत्तर: ख)

16.7 संदर्भ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, लालमणि. (1973). भारतीय ताल वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

16.8 अनुशंसित पठन

मिश्र, छोटे लाल. (2004). ताल प्रसून, कनिष्क पबलिकेशस, नई दिल्ली।

मिश्र, लालमणि. (1973). भारतीय ताल वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

16.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. झप ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. आडाचारताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. धमार की तिगुण लिखिए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल की तिगुण व चौगुण लिखिए।

प्रश्न 5. धमार ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 6. कहरवा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 7. झप ताल की दुगुण व तिगुण लिखिए।

प्रश्न 8. आडाचारताल की तिगुण व चौगुण लिखिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

- प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 6. राग शुद्ध सारंग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 7. राग बागेश्री का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 8. राग बागेश्री में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 9. राग बागेश्री में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 10. राग बागेश्री में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 11. राग बागेश्री में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 12. राग बिहाग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 13. राग बिहाग का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 14. राग बिहाग में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)
- प्रश्न 15. राग बिहाग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 16. राग बिहाग में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 17. राग बिहाग में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 18. राग बिहाग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)
- प्रश्न 19. ठुमरी की स्वरलिपि लिखिए। (गायन के लिए)
- प्रश्न 20. ठुमरी की स्वरलिपि लिखिए। (वादन के लिए)